Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ॐ

श्रीपरमात्मने नमः

जैनग्रन्थरत्नाकरस्थ- रत्न ८ वां.

श्रीशुभचन्द्राचार्यविरचिता

ज्ञानार्णवान्तर्गता

द्वादशानुप्रेक्षा भाषाटीकासहिता.

जिसको

मुम्बयीस्थ

जैनग्रन्थरत्नाकरकार्यालयके मालिकने

संशोधनपूर्वक

कर्णाटकप्रिन्टींगप्रेसमें छपाकर

प्रसिद्ध किया.

प्रथमावृत्तिः

मूल्य ६ आने] [डांकव्यय आधा आना.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रस्तावना.

संसारसे वैराग्य उत्पन्न करनेकेलिये जिनमतमें द्वादशानुप्रेक्षा ही है. यद्यपि जैनग्रंथरत्नाकरमें **स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा** नामका संस्कृत छाया और **भाषाटीकासहित** बहुत बडा ग्रंथ इसी विषयका छप गया है परन्तु वह बहुत बडा होनेसे उसमें विशेष विषयोंका भी वर्णन हुआ है. संक्षिप्ततासे द्वादशभावनाका ही व्याख्यान हो ऐसा एक छोटासा ग्रन्थ छपाकर प्रचार करनेकेलिये भरोंचनिवासी शेठ-**चुन्नीलाल विरचंदजी** नाळिएरवालोंकी अतिशय प्रेरणा होनेपर यह श्रीमच्छुभचन्द्राचार्यविरचित योगप्रदीपाधिकारस्वरूप **ज्ञानार्णव नामके** संस्कृत ग्रंथमेंसे द्वादशानुप्रेक्षा नामका दूसरा अध्याय उद्धृत करके जयपुरनिवासी स्वर्गीय विद्वद्वर्य पं० **जयचन्द्रजी छाबडा**कृत वचनिकासहित इस जैनग्रन्थरत्नाकरमें छपाकर सर्वसाधारणके हितार्थ प्रसिद्ध किया है—इसकी नित्य स्वाध्याय करनेसे संसारदेहभोगोंसे अरुचि होकर कषायोंकी मंदता होती है और आत्महितसाधनमें प्रवृत्ति होती है. इस कारण सबको इसकी एक २ प्रति मंगाकर स्वाध्याय करना चाहिये.

जैनीभाइयोंका दास,

ता १-३-१९०५ ईसवी. } **पन्नालाल बाकलीवाल.**

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ॐ

श्रीसहजात्मस्वरूपाय नमः ।

श्रीवीरचंद अमीचंद नाळिएरवाला.

(भरोंच बंदर) स्मारकफंड तरफथी

ज्ञानवृद्धि अर्थे

प्रथम पुस्तक.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ॐ

श्री परमात्मने नमः ।

जैनग्रन्थरत्नाकरस्थ रत्न ८ वां.

श्रीशुभचन्द्राचार्यविरचित ज्ञानार्णवान्तर्गता

द्वादशानुप्रेक्षा भाषाटीकासहिता.

दोहा

श्रीयुत वीर जिनेन्द्रकू बंदौ मनवचकाय ।
भवपद्धति भ्रममेटिकैं, करै मोक्ष सुखदाय ॥१॥

आगें या प्राणीकूं ध्यानकै (योग्यसाधनकै) सन्मुख होनेकूं संसारदेह भोगतैं वैराग्य उपजावना है तहाँ वैराग्यका कारण बारह भावना (द्वादशानुप्रेक्षा) हैं तिनिका व्याख्यान करिसी तिनिके भावनेकी प्रथम ही प्रेरणा करै हैं—

शार्दूलविक्रीडित छंद ।

सङ्गैः किं न विषाद्यते वपुरिदं किं छिद्यते नामयैः
मृत्युः किं न विजृम्भते प्रतिदिनं द्रुह्यन्ति किं नापदः ।
श्वभ्राः किं न भयानकाः स्वपनवद्भोगा न किं वञ्चका
येन स्वार्थमपास्य किन्नरपुरप्रख्ये भवे ते स्पृहा ॥१॥

भावार्थ—हे आत्मन् ! या संसारविषै सग कहिये—धन धान्य स्त्री कुटंब आदिका मिलापरूप परिग्रह हैं ते कहा तोकूं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विषादरूप नाही करै है? बहुरि यह शरीर है सो कहा रोगनि करि नाही छिदै है? बहुरि मृत्यु है सो दिनप्रति तोकूं ग्रासनेकूं कहा मुख नाही उघाड़ै है? बहुर आपदा हैं ते कहा नाहीं परिपूर्ण होय हैं अथवा कहा द्रोह नाहीं करै है? बहुरि श्वभ्र जे नरक, ते कहा भयानक नाहीं है? बहुरि भोग हैं ते कहा सुपनेकी ज्यों तोकूं ठगनेवाले नाहीं हैं? जाकरि तेरे अपने स्वार्थकूं छोडिकरि इस किन्नरपुर इन्द्रजाल करिरच्या नगरसारिखे संसारविषै बांछा वर्त्तै है?

भावार्थ—संसार देह भोगकूं ऐसैं देखकरि भी स्वार्थ विषै बांछा करै है ताका अज्ञानपणा दिखाया है ॥

फिर भी या प्राणीकी भूलिदिखावै हैं,—

श्लोक.

नासादयसि कल्याणं न त्वं तत्त्वं समीक्षसे ।
न वेत्सि जन्मवैचित्र्यं भ्रातोः भूतैर्विडम्बितः ॥२॥

भाषार्थ— हे भाई तू भूत जे इन्द्रियनिके विषय तिनिकरि विटंबनाकूं नाही प्राप्त होय है, बहुरि तत्त्वकूं नाही विचारै है. बहुरि जन्म जो संसार; ताका विचित्रपणाकूं नाही जाणै है सो यह बडी भूलि है ॥

असद्विद्याविनोदेन मात्मानं मूढ! वञ्चय ।
कुरु कृत्यं न किं वेत्सि विश्ववृत्तं विनश्वरम् ॥३॥

भाषार्थ—हे मूढ प्राणी! असद्विद्या जो अनेक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खोटी कला चतुराई शृंगारादि शास्त्रविद्या; तिनिके कुतूहल करि आत्माकूं मति ठगावै, किछू तेरे करने योग्य हितरूप कार्य करि. यह समस्त जगतका वृत्त प्रवर्तना विनाशीक है, ताहि तू कहा नाहीं जानै है? ऐसे स्वहितके विषै प्रेरणा है ॥

समत्वं भज भूतेषु निर्ममत्वं विचिन्तय ।
अपाकृत्य मनःशल्यं भावशुद्धिं समाश्रय ॥ ४ ॥

भाषार्थ—हे आत्मन्! तू भूत–जे प्राणी जीव तिनिविषै समानपणाकूं सेय, सर्व प्राणीनिकूं आपसमान जाणि, बहुरि निर्ममत्वकूं चिंतवन करि, ममत्वकूं छोड़ि. कहा करिकैं? मनकी शल्यकूं दूरि करिकैं—माया मिथ्या निदान शल्यकूं चित्तमैं मति राखै. बहुरि भावकी शुद्धताकूं अंगीकार करि, ऐसा उपदेश है ॥

आगें बारह भावनाका अंगीकारका उपदेश करै हैं,—

चिनु चित्ते भृशं भव्य भावना भावशुद्धये ।
याः सिद्धान्तमहातन्त्रे देवदेवैः प्रतिष्ठिताः ॥ ५ ॥

भाषार्थ—हे भव्य! तू भावना हैं तिनहि भावनिकी शुद्धताके अर्थि मनविषै संचय करि, चितवनरूप करि. ते भावना कैसी? देवदेव जे तीर्थंकर देव तिनिनै सिद्धान्तके प्रबन्धविषै प्रतिष्ठारूप करी प्रसिद्ध करी ॥

ते भावना कैसी हैं—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ताश्च संवेगवैराग्ययमप्रशमसिद्धये ।
आलानिता मनःस्तम्भे मुनिभिर्मोक्तुमिच्छुभिः ॥ ६॥

भाषार्थ—ते भावना कर्मनितैं छूटनेकेंअर्थि जे मुनि, तिननै संवेग कहिये–धर्मसूं अनुराग अर संसारसूं वैराग्य, अर यम कहिये–महाव्रतादिरूप चरित्र अर प्रशम कहिये–कषायनिका अभावरूप शान्तभाव इनिकी सिद्धिकेंअर्थि अपने चित्तरूपी स्तम्भकै विषै दृढ ठहराई. **भावार्थ**—इनि विषै चित्त निरन्तर लग्या रहै, अन्यतरफ न जाय ऐसैं आलानित करी ॥

आगें ते भावना कैसी हैं सो कहै हैं,—

अनित्याद्याः प्रशस्यन्ते द्वादशैता मुमुक्षुभिः ।
या मुक्तिसौधसोपानराजयोऽत्यन्तबन्धुराः ॥ ७॥

भाषार्थ—ते भावना अनित्यकूं आदि देकर द्वादश हैं तिनिकूं मोक्षके इच्छुक मुनि हैं ते प्रशंसारूपकारि कही हैं कैसी हैं ते ? मुक्ति रूपीमहलके चढनेकी अत्यन्त बन्धुरा मर्यादरूप रची हुई पैडीनकी पंक्ति सारिखी है ॥

आगें इनि द्वादश भावनाका न्यारा न्यारा व्याख्यान करै हैं, तहाँ प्रथम ही अनित्य भावनाका व्याख्यान करै हैं,—

अथ अनित्यानुप्रेक्षा लिख्यते ।

हृषीकार्थसमुत्पन्ने प्रतिक्षणविनश्वरे ।
सुखे कृत्वा रतिं मूढ ! विनष्टं भुवनत्रयम् ॥ ८ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषार्थ—हे मूढ प्राणी ! ये भुवनत्रयके प्राणी इन्द्रिनिके विषयिनितैं उपज्या प्रतिक्षण विनाशीक सुखकेविषै रति-प्रीतिकरि विनाशकूं प्राप्तभये सो तू जाणि ॥

भवाब्धिप्रभवाः सर्वे सम्बन्धा विपदास्पदम् ।
संभवन्ति मनुष्याणां तथान्ते सुष्टुनीरसाः ॥ ९ ॥

भाषार्थ—या संसारमें जेते संसाररूप समुद्रतैं भये मनुष्यनिके सबन्ध हैं ते सर्व आपदाके ठिकाणे हैं. तहां अंत-विषै अतिशयकरि नीरस हैं. यह प्राणी तिनितैं प्रीति करै है सुखमानै है सो भ्रम है ॥

वपुर्विद्धि रुजाक्रान्तं जराक्रान्तं च यौवनम् ।
ऐश्वर्यं च विनाशान्तं मरणान्तं च जीवितम् ॥ १० ॥

भाषार्थ—हे आत्मन् ! शरीरकूं तौ तू रोगकरि व्याप्त जाणि अर यौवनकूं जराकरि व्याप्त जाणि बहुरि ऐश्वर्यकूं वि-नाशपर्यन्त जाणि बहुरि जीवितकूं मरणपर्यन्त जाणि. **भावार्थ**—ऐसें ए पदार्थ प्रतिपक्षसहित जानने ॥

ये दृष्टिपथमायाताः पदार्थाः पुण्यमूर्त्तयः ।
पूर्वाह्ने न च मध्याह्ने ते प्रयान्तीह देहिनाम् ॥ ११ ॥

भाषार्थ—या संसारविषै जे पुण्यकी मूर्ति भले भले पवित्र पदार्थ प्रभातविषै प्राणीनिके दृष्टिगोचर आये थे, ते मध्याह्नकालविषै नाहीं देखिये हैं जाते रहै हैं. हे आत्मन् ! तू ऐसें जाणि ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यज्जन्मनि सुखं मूढ ! यच्च दुःखं पुरःस्थितम् ।
तयोर्दुःख मनन्तं स्यात्तुलायां कल्प्यमानयोः॥ १२ ॥

भाषार्थ—हे मूढप्राणी जो कछू इस संसारमें तेरे सुख आगैं तिष्ठ्या सुख है, बहुरि जो किछु दुःख हैं तिनि दोऊनिकूं ज्ञानरूप तुलामैं (तराजूमैं) चढाय तोलै तौ सुखतैं दुःख अनन्तगुणा होय है यह प्रत्यक्ष अनुभवगोचर है ॥

आगें भोगनिका निषेध है—

भोगा भुजङ्गभोगाभाः सद्यः प्राणापहारिणः ।
सेव्यमानाः प्रजायन्ते संसारे त्रिदशैरपि ॥ १३ ॥

भाषार्थ—या संसारविषै भोग हैं ते सर्पके फणसारिखे हैं ते देवनिकरि भी सेये हुए तत्काल प्राणनिके हरनेवाले होय हैं. भावार्थ–देव भी भोगनिकूं सेवता मरिकरि एके-न्द्रिय उपजै है तौ मनुष्य तो नरकादिकविषै जाय ही जाय ॥

आगें या प्राणीकी अज्ञानता दिखावै हैं—

वस्तुजातमिदं मूढ ! प्रतिक्षणविनश्वरम् ।
जानन्नपि न जानासि ग्रहः कोऽयमनौषधः ॥ १४ ॥

भाषार्थ—हे मूढ प्राणी ! या संसारविषै समस्त वस्तुका समूह है सो पर्यायकरि प्रतिक्षण विनाशीक है. यह प्रत्यक्ष अनुभवमें आवै है ताकूं तू जानता संता भी न जाणै है

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भूलै है सो यह तेरे कहा आग्रह है ? अथवा तोकूं पिसाच लाग्या है जाकी किछू औषधि नाहीं ऐसा है ॥

आगें अन्यप्रकार कहै हैं—

**क्षणिकत्वं वदन्त्यार्या घटीघातेन भूभृताम् ।
क्रियतामात्मनः श्रेयो गतेऽयं नागमिष्यति ॥ १५ ॥**

भाषार्थ—या लोकविषै राजानिकै घड़ावलि (घंटा) बाजै है सो क्षणिकपणाकूं कहै है जो हैं "लोक हो ! अपना कल्याणकूं करो यह घड़ी गयी है सो फेरि न आवैगी" ऐसें घड़ीके घातकरि पुकारै है ॥

आगें फेरि उपदेश करै हैं—

**यद्यपूर्वं शरीरं स्याद्यदि वात्यन्तशाश्वतम् ।
युज्यते हि तदा कर्तुमस्यार्थे कर्मनिन्दितम् ॥ १६ ॥**

भाषार्थ—हे प्राणी जो यह शरीर अपूर्व होय पहिले कदे न पाया होय अथवा अत्यंत शाश्वता है कदे विनशै नाहीं तौ या शरीरकैअर्थि निन्द्यकर्म भी करबो युक्त है सौ तौ है नाहीं. पहिले अनेकबार शरीर धारे अर विनशे अर अब भी विनशैहोगा तातैं ऐसेकेअर्थि निन्द्यकार्य करना उचित नाहीं, अपना कल्याण होय ऐसा कार्य करना ॥

आंगे फेरि इस ही अर्थकों सूचता कहै हैं—

**अवश्यं यान्ति यास्यन्ति पुत्रस्त्रीधनबान्धवाः ।
शरीराणि तदैतेषां कृते किं खिद्यते वृथा ॥ १७ ॥**

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषार्थ—या संसारविषै पुत्र स्त्री धन बान्धव सर्व ही कुटंब तथा शरीर ये सर्व ही अवश्य जाते रहै हैं तथा आगानै भी जायहींगे तौ इनिके कार्यकेअर्थि वृथा क्यों खेद कीजिये ? ऐसा उपदेश है ॥

फेरि कहै हैं—

नायाता नैव यास्यन्ति केनापि सह योषितः ।
तथाप्यज्ञाः कृते तासां प्रविशन्ति रसातलम् ॥१८॥

भाषार्थ—या संसारमें स्त्री हैं ते कोईकी साथि परलोकसूं आई नाहीं तथा परलोकमें लार[1] जासी नाहीं तौऊ अज्ञानी लोक हैं ते तिनिके अर्थि निन्द्यकार्य करि रसातल—कहिये नरकमें प्रवेश करै है सो यह बडा अज्ञान है ॥

आगें कहै हैं बन्धुजन ऐसे हैं,—

ये जाता रिपवः पूर्वं जन्मन्यस्मिन्विधेर्वशात् ।
त एव तव वर्त्तन्ते बान्धवा बद्धसौहृदः ॥ १९ ॥

भाषार्थ—हे आत्मन् ! जे तेरे पूर्वभवविषै वैरी भये थे ते ही कर्मके वशकारि या भवविषै बांध्या है मित्रपणा जिनिनै ऐसे बान्धव भये हैं. **भावार्थ**—तू या मति जाणै ए मेरे बान्धव हितू हैं ॥

रिपुत्वेन समापन्नाः प्राक्तनास्तेऽत्र जन्मनि ।
बान्धवाःक्रोधरुद्धाक्षाः दृश्यन्ते हन्तुमुद्यताः ॥२०॥

---

१ संग वा पीछें.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषार्थ—हे आत्मन् ! पूर्व भवविषै जे बांधव थे ते या जन्मविषै वैरीपणा करि प्राप्त भये सन्ते क्रोध करि रुद्ध हैं रुके हैं नेत्र जिनिके ऐसे भयेसन्ते तोकूं हणवेकूं उद्यमी होय हैं यह प्रत्यक्ष देखिये है ॥

आगें कहे हैं एह प्राणी आन्धेकी ज्यों हैं—

अङ्गनादिमहापाशैरतिगाढं नियन्त्रिताः ।
पतन्त्यन्धमहाकूपे भवाख्ये भविनोऽध्वगाः ॥ २१ ॥

भाषार्थ—या संसार विषै जे प्राणी ते ही भये पथिक (मुसाफिर) ते स्त्री आदिक कुटुम्बरूपी पासीकरि अतिशय करि गाढे बँधे संसारनामा अन्धकूपविषै आंधेकी ज्यों पड़े हैं। जैसें—आंधा पुरुष गैलै (रस्ते) चालै तब अन्धकूपमें पड़ै, तैसें ए प्राणी सूझते भी आंधेकी ज्यों संसारकूपमें पड़े हैं ॥

आगें फेरि उपदेश करै हैं,—

पातयन्ति भवावर्ते ये त्वां ते नैव बान्धवाः ।
बन्धुतां ते करिष्यन्ति हितमुद्दिश्य योगिनः॥२२॥

भाषार्थ—हे आत्मन् ! जे तोकूं संसाररूप भवनिविषै पटकै हैं ते तेरे बांधव नाही हैं किन्तु जे हित करैं ते बांधव हैं. ऐसे बंधुपणा करनेवाले तेरा हित विचारि करै हैं ते योगीश्वर तेरे बांधव हैं. योगीश्वर प्राणिकूं हितका उपदेश देकरि अज्ञान मेटि हितरूप स्वर्गमोक्षका मार्ग बतावै हैं ते सांचे बांधव हैं ॥ २२ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आगें आचार्य प्राणीनिकों आश्चर्य करि कहै हैं,—

शरीरं शीर्यते नाशा गलत्यायुर्न पापधीः ।
मोहः स्फुरति नात्मार्थः पश्य वृत्तं शरीरिणाम्॥२३

भाषार्थ—देखो प्राणीनिका यह प्रवर्तन आश्चर्य रूप है जो शरीर तो नित्य छीजै है अर आशा नाही छीजै है नित्य बधै है. बहुरि आयुर्बलतौ नित्य छीजै है[1] अर पाप विषै बुद्धि बधै है. बहुरि मोह तौ नित्य स्फुरायमान होय है अर अपना अर्थ कल्याणमें नाहीं प्रवर्त्तै है ऐसा कोई अज्ञानका माहात्म्य है ॥

आगें उपदेश करै हैं,—

यास्यन्ति निर्दया नूनं यद्दत्वादाहमूर्जितम् ।
हृदि पुसां कथं ते स्युस्तव प्रीत्यै परिग्रहाः ॥२४॥

भाषार्थ—हे आत्मन् ! ए परिग्रह हैं ते जो पुरुषनिके हृदयविषै उत्कृष्ट दाह देकरि निश्चयतैं जाते रहै हैं ते परिग्रह तेरे प्रीतिके अर्थ कैसें होय है ? यह विचारि. **भावार्थ**—तू वृथा प्रीति मति करै ए रहनेके नाहीं ॥

आगैं अज्ञानके निमित्ततैं नरक आदिका दुःख सहैगा ऐसैं कहै हैं,—

अविद्यारागदुर्वारप्रसरान्धीकृतात्मनाम् ।
श्वभ्रादौ देहिनां नूनं सोढव्या सुचिरं व्यथा ॥ २५ ॥

१. घटै है.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भावार्थ—अविद्या कहिये मिथ्याज्ञान तातैं भया जो परवस्तु विषै राग, ताका जो दुर्निवार फैलना ताकरि आंधे किये जे प्राणी, तिनिकूं निश्चयकरि नरक आदिकविषै बहुत कालपर्यन्त व्यथा पीड़ा सहनी होयगी, ताका प्राणीनिकूं चेत ही नाहीं है ॥

आगैं कहे हैं जो विषयनिविषै सुख हेरै (ढूंढै) है ते कहा करै हैं,

वह्निं विशति शीतार्थं जीवितार्थं पिबेद्विषम् ।
विषयेष्वपि यः सौख्यं अन्वेषयति मुग्धधीः ॥२६॥

भावार्थ—जो मूर्खबुद्धि विषयनिविषै सुख हेरै है सो शीतलताके अर्थि अग्निमें प्रवेश करै है. बहुरि जीवनेके अर्थि विष पीवै है. **भावार्थ**—इस विपरीतबुद्धितैं सुख तौ नाही पावैगा दुःखी ही होयगा ॥

आगैं जिनिके अर्थि पाप करै है तिनिकी रीति कहै हैं—

कृत येषां त्वया कर्म कृतं श्वभ्रादि साधकम् ।
त्वामेव यान्ति ते पापा वञ्चयित्वा यथायथं ॥ २७ ॥

भावार्थ—हे आत्मन्! जिनि कुटुंबादिकनिकै अर्थि तू नरकादिकका देनेवाला पापकर्म किया, सो वै पापी तोकूं निश्चयतैं ठिगिकरि अपनी अपनी गतिकूं चले जांय हैं पापका फल तोहीकूं भोगना पड़ै है ॥

आगैं याकूं करने योग्य उपदेश करै हैं,—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनेन नृशरीरेण यल्लोकद्वयशुद्धिदम् ।
विवेच्य तदनुष्ठेयं हेयं कर्म ततोऽन्यथा ॥ २८ ॥

भाषार्थ—या प्राणीकूं इस मनुष्यशरीरकरि जो दोऊं लोकविषै शुद्धताका देनेवाला कार्य विचारि करि अर तिसकूं आचरण करना अर तिसतैं विरुद्ध कार्य होय सो छोडना यह सामान्य उपदेश है ॥

आगें कहै हैं जे ऐसैं न करै हैं ते कहा करै हैं,—

वर्द्धयन्ति स्वघाताय ते नूनं विषपादपम् ।
नरत्वेऽपि न कुर्वन्ति ये विवेच्यात्मनेहितम् ॥ २९ ॥

भाषार्थ—ये पुरुष सर्व विचारविषै समर्थ अर जाका फेरि पावना दुर्लभ है ऐसा मनुष्यपणा पायकरि भी विचारि करि फिर अपना हित नाहीं करै हैं ते निश्चयकरि अपने घातके अर्थि विषके वृक्षकूं बधावै है. पापकर्म हैं सो विषका वृक्षवत् है सो याके फल मारनेवाले ही हैं ॥

आगें प्राणीनिका उपजना कुलविषै है ताका दृष्टान्त दिखावै हैं,—

यद्वद्देशान्तरादेत्य वसन्ति विहगा नगे ।
तथा जन्मान्तरान्मूढ ! प्राणिनः कुलपादपे ॥ ३० ॥

भाषार्थ—जैसैं पक्षी हैं ते अन्य देशनिसूं आय करि वृक्षविषै बसै हैं तैसैं हे मूढ पाणी ! ए प्राणी हैं ते अन्य जन्मसूं आय कुलरूपी वृक्षविषै बसैं हैं ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रातस्तरुं परित्यज्य यथैते यान्ति पत्रिणः ।
स्वकर्मवशगाः शश्वत्तथैते क्वापि देहिनः ॥ ३१ ॥

भाषार्थ—बहुरि जैसैं प्रभाति ही ते पक्षी तिस वृक्षकूं छोडि करि कहूं जाय है तैसैं ते प्राणी भी अपने २ कर्मके वश-करि निरन्तर कहूं अपनी उपार्जी गतिकूं चले जांय हैं ॥

फेरि अन्यरीति कहै हैं—

गीयते यत्र सानन्दं पूर्वाह्णे ललितं गृहे ।
तस्मिन्नेव हि मध्याह्ने सदुःखमिहरुद्यते ॥ ३२ ॥

भाषार्थ—जिस घरविषै प्रभाति तौ आनंद सहित सुंदर गीत गाइये हैं तिस ही घरमैं मध्याह्नकालविषै दुःखसहित रोइये हैं. यह इस संसारविषै विचित्रता है ॥

फेरि कहै हैं —

यस्य राज्याभिषेकश्रीः प्रत्यूषेऽत्र विलोक्यते ।
तस्मिन्नहनि तस्यैव चिताधूमश्च दृश्यते ॥ ३३ ॥

भषार्थ—या संसारविषै प्रभाति ही जाकै राज्यके अभि-षेककी लक्ष्मी (शोभा) देखिये है तिस ही दिनविषै तिसहीकै रथीकी (चिताकी) धूवां देखिये हैं. **भावार्थ**—प्रभाति तौ जाकै राज्याभिषेक होय अर तिस ही दिनविषै सो ही मरणकूं प्राप्त होय है यह संसारकी विचित्रता है ॥

फेरि शरीरकी व्यवस्था कहै हैं—

अत्र जन्मनि निर्वृत्तं यैः शरीरं तवाणुभिः ।
प्राक्तनान्यत्र तैरेव खण्डितानि सहस्रशः ॥ ३४ ॥

२

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषार्थ—हे आत्मन्! या संसारविषै जिन परमाणूनि करि तेरा शरीर रच्या है तिनि ही परमाणूनिकरि इस संसारविषै पहले हजारबार खंड खंड किये हैं. भावार्थ—पुराणे परमाणु तौ खिरते जांय हैं नवे ग्रहण होते जांय हैं यातैं ते ही परमाणु तौ शरीरकूं रचै हैं अर ते ही विगाड़नेवाले होय हैं. यह शरीरकी दशा है ॥

फेरि कहै हैं—

शरीरत्वं न ये प्राप्ता आहारत्वं न येऽणवः ।
भ्रमतस्ते चिरं भ्रातर्यन्न ते सन्ति तद्गृहे ॥ ३५ ॥

भाषार्थ—हे भाई! तेरै या संसारमैं बहुतकाल भ्रमतेके जे परमाणु शरीरपणाकूं न प्राप्त भये अर आहारपणाकूं न प्राप्त भये ऐसे परमाणु तिस शरीरके ग्रहणविषै नाहीं है. भावार्थ—या शरीरविषै परमाणूं ऐसे नाहीं हैं जे पूर्वैं शरीररूप आहाररूपकरि तैं नाहीं ग्रहण किये अर्थात् अनन्त प्रावर्तनमैं कईबार ग्रहणमैं आये हैं ॥

आगें ऐश्वर्यआदिकी व्यवस्था दिखावै हैं—

सुरोरगनरैश्वर्यं शक्रकार्मुकसन्निभम् ।
सद्यः प्रध्वंसमायाति दृश्यमानमपि स्वयं ॥ ३६ ॥

भाषार्थ—या जगत विषै सुर कहिये—देवनिका उरग कहिये भवनवासीनिका नर कहिये—मनुष्यनिका ऐश्वर्य—विभव इन्द्र चक्रवर्त्तिपणा सो इन्द्रधनुषसारिखा है. दीखनेमैं अति

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुंदर दीखै अर तत्काल देखतां देखतां आपै आप विलय जाय है. यह ऐश्वर्यकी व्यवस्था है ॥

फेरि अन्यप्रकार दृष्टान्त कहै हैं—

यान्त्येव न निवर्त्तन्ते सरितां यद्वदूर्मयः ।
तथा शरीरिणां पूर्वा गता नायान्ति भूतयः ॥३७॥

भाषार्थ—जैसें नदीनिकी लहरि हैं ते जाय ही हैं उलटी फेरि आवै नाहीं है. तैसें प्राणीनिकै पूर्वै विभूति होय हैं ते नष्ट भये पीछैं फेरि उलटी नाहीं आवै हैं. यह प्राणी हर्ष विषाद वृथा करै है ॥

आगें फेरि याही अर्थकूं सूचता कहै हैं,—

क्वचित्सरित्तरङ्गाली गतापि विनिवर्त्तते ।
न रूपबललावण्यं सौन्दर्यं तु गतं नृणाम् ॥ ३८॥

भाषार्थ—नदीनिकी तरंगनिकी पंक्ति है सो कोई जायगां गई भी उलटी आवै है अर मनुष्यनिकै रूप बल लावण्य सुन्दरपणा तौ गया पीछैं उलटा बाहुड़े (लौटै) नाहीं है. यह प्राणी वृथा तिनिकी आशा लगाय राखै है ॥

आगैं फेरि आयु अर यौवनकी व्यवस्थाका दृष्टान्त कहै हैं,—

गलत्येवायुरव्यग्रं हस्तन्यस्ताम्बुवत्क्षणे ।
नलिनीदलसंक्रान्तं प्रालेयमिव यौवनम् ॥३९॥

अर्थ— प्राणीनिकै आयुर्बल है सो तौ हाथविषै क्षेप्या जलकी ज्यौं क्षणक्षणमें निरन्तर क्षरै ही है. बहुरि यौवन है

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सो कमलिनीके पत्रविषै मिल्या जो पाला[1] ताकी ज्यों तत्काल ढलकि जाय है यह प्राणी वृथा स्थिरकी बुद्धि करै है ॥

आगें मनोज्ञ विषयनिकी व्यवस्थाका दृष्टान्त कहै हैं,--

मनोज्ञविषयैः सार्द्धं संयोगाः स्वप्नसन्निभाः ।
क्षणादेव क्षयं यान्ति वञ्चनोद्धतबुद्धयः ॥४०॥

भाषार्थ—प्राणीनिकै मनोहर इन्द्रियनिके विषयनिके साथि संयोग हैं ते स्वप्नके संयोग सारिखे हैं क्षणमात्रमें क्षय जाय हैं. कैसे हैं? ठगनेविषै उद्धत है बुद्धि जिनिकै. जैसैं ठग कछू तत्काल चमत्कार दिखायदे पीछें सर्वस्व हरै, तैसैं हैं. यह प्राणी तिनिका विश्वास वृथा करै है ॥

फेरि अन्य सामग्रीकी व्यवस्था कहै हैं—

घनमालानुकारीणि कुलानि च बलानि च ।
राज्यालङ्कारवित्तानि कीर्त्तितानि महर्षिभिः ॥४१॥

भाषार्थ—प्राणीनिकै कुल कुटुंब हैं बहुरि बल सैना हैं ते, बहुरि राज्यके अलंकार छत्र चामर आभूषण वित्त-धन सम्पदा हैं ते मेघके बादलेनिकी पंकति सारिखे हैं, देखतै देखतै विलय जाय हैं. ऐसैं महर्षि जे बडे ऋषीश्वर तिनिकर कहे हैं. यह मूढ प्राणी वृथा नित्यकी बुद्धि करै है ॥

आगें शरीरकूं निःसार कहै हैं—

---

१. ओसकी बूंद.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फेनपुञ्जेऽथवारम्भस्तम्भे सारः प्रतीयते।
शरीरे न मनुष्याणां दुर्बुद्धे विद्धि वस्तुतः ॥४२॥

भाषार्थ—झागके (फेनके) पुंजविषै तथा केलिके थंभ विषै तौ किछू सार प्रतीतिगोचर होय भी है अर इनि मनुष्यनिके शरीरविषै तौ किंचिन्मात्र भी सार नाहीं देखिये है. हे दुर्बुद्धि प्राणी तूं परमार्थथकी यहु जाणि. **भावार्थ**—यहु दुर्बुद्धि प्राणी मनुष्यके शरीरमें किछू सार जाणै है ताकूं कह्या है जो यामें किछू भी सार नाहीं है मृतक भये पीछें भस्म होय है किछू भी अवशेष न रहै है यह प्राणी वृथा सारकी बुद्धि करै है॥

फेरि कहै हैं,—

यातायातानि कुर्वन्ति ग्रहचन्द्रार्कतारकाः।
ऋतवश्च शरीराणि न हि स्वप्नेऽपि देहिनाम् ॥४३॥

भाषार्थ—या लोकमें ग्रह चन्द्रमा सूर्य तारा बहुरि छह ऋतु ए सारे जांय हैं आवै हैं. ऐसैं गमनागमन करै हैं. बहुरि प्राणीनिके शरीर हैं ते जे गये ते फेरि स्वप्नविषै भी उलटे नाहीं आवै हैं यह प्राणी वृथा इनिसूं प्रीति करै है॥

फेरि कहै हैं,—

ये जाताः सातरूपेण पुद्गलाः प्राङ्मनःप्रियाः।
पश्य पुंसां समापन्ना दुःखरूपेण तेऽधुना ॥४४॥

भाषार्थ—या जगतविषै जे पुद्गलके स्कंध प्राणीनिके मनके

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्यारे सुखके देनेवाले पहिले उपजे थे, ते ही अब दुःख देनेवाले होय गये. ऐसें हे आत्मन् तू देखि! ऐसा कोई नाहीं है जो शाश्वता सुखरूप ही रहै ॥

अब सामान्यकरि कहै हैं,—

मोहाञ्जनमिवाक्षाणामिन्द्रजालोपमं जगत् ।
मुह्यत्यस्मिन्नयं लोको न विद्मः केन हेतुना ॥४५॥

भाषार्थ—यह जगत इन्द्रजाल सारिखा है प्राणीनिके नेत्रनिकूं मोहिनी अंजन सारिखा है भुलावै है. और यह लोक है सो याविषै मोहकूं प्राप्त होय है भुलै है तहां आचार्य कहै हैं हम नाहीं जानै हैं जो यहां कौन कारणकरि भूलै है. यह प्रबल मोहका ही माहात्म्य है ॥

ये चात्र जगतीमध्ये पदार्थाश्चेतनेतराः ।
ते ते मुनिभिरुद्दिष्टाः प्रतिक्षणविनश्वराः ॥४६॥

भाषार्थ—या जगतविषै जे जे चेतन अर अचेतन पदार्थ हैं ते ते मुनिनिनै क्षणक्षणप्रति विनाशीक कहे हैं । यह प्राणी नित्यरूप मानै है सो भ्रम है ॥

अब संक्षेपकरि कहै हैं अर अनित्य भावनाके कथनकूं संकोचै हैं,—

गगननगरकल्पं संगमं वल्लभानाम्
जलदपटलतुल्यं यौवनं वा धनं वा ।
स्वजनसुतशरीरादीनि विद्युच्चलानि
क्षणिकमिति समस्तं विद्धि संसारवृत्तम् ॥४७॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषार्थ—आचार्य उपदेश करै है जो हे प्राणी या संसारका परिवर्तन स्वरूप है ताहि तू ऐसा क्षणिक जाणि. सो कहा ? सो ही कहै हैं,—ये बल्लभा जे प्यारी स्त्रीजन हैं तिनिका संगम तो आकाशविषै मायामयी नगर देवनिकारि रच्या होय सो त्वरित विलय जाय तैसा जानि. बहुरि यह तेरै यौवन है तथा धन है सो जलद जो बादल ताका पटल तुल्य जानि, क्षणेकमें विघटि जाय है. बहुरि स्वजनपरिवारके लोक तथा पुत्र अर शरीर आदिक सर्व ही पदार्थ बीजली सारिखे चंचल जानि, तत्काल चिमककरि विलय जाय हैं. ऐसें जगतकी व्यवस्था अनित्य जानि, नित्यकी बुद्धि मति करै यह उपदेश है ॥

यहां विशेष इतना और जानना जो यह लोक षट्द्रव्य स्वरूप है सो द्रव्यदृष्टिकरि देखिये तब तौ छहों द्रव्य अपने अपने स्वरूपरूप शाश्वते नित्य विराजै हैं. तथापि इनका पर्याय स्वभाव विभावरूप उपजै विनसै है ते अनित्य हैं. तहां या प्राणीकै द्रव्यस्वरूपका तौ ज्ञान नाहीं अर पर्यायहीकूं वस्तुस्वरूप मानि तिनिविषै नित्यताकी बुद्धि कारि ममत्व राग द्वेष करै है तिस कारणतैं याकूं यह उपदेश है जो पर्याय बुद्धिका एकान्त छोड़ि द्रव्यदृष्टिकरि अपना स्वरूपकूं कथंचित् नित्य जानि तिसका ध्यान करि लयकूं प्राप्त होय करि वीतरागविज्ञान दशाकों प्राप्त होय. ऐसा आशय जानना । ऐसें अनित्य भावनाका वर्णन किया ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दोहा-

द्रव्यरूपकरि सर्व थिर, परजय थिर है कौण ।
द्रव्यदृष्टि आपा लखो, पर्जयनयकरि गौण ॥ १ ॥

इति अनित्यानुप्रेक्षा ॥१॥

अथ अशरणानुप्रेक्षा लिख्यते ।

आगें अशरणभावनाका व्याख्यान करै हैं-तहां प्रथम ही कहै हैं जो काल आवै तब कोऊ शरणा नाहीं,—

न स कोऽप्यस्ति दुर्बद्धे शरीरी भुवनत्रये ।
यस्य कण्ठे कृतान्तस्य न पाशः प्रसरिष्यति ॥ १ ॥

भावार्थ—हे दुर्बद्धि प्राणी तू शरणा काहूका चाहै है सो या तीन भुवनमें ऐसा कोई प्राणी नाहीं है जाके कंठविषै कालका पाश नाहीं पडै है. सर्व प्राणी कालकै वशि है ॥

फेरि विशेष कहै हैं,—

समापतति दुर्वारे यमकण्ठीरवक्रमे ।
त्रायते तु न हि प्राणी सोद्योगैस्त्रिदशैरपि ॥ २ ॥

भावार्थ—इस दुर्निवार कालरूपी सिंहके चरणनीचें आवते संतै प्राणी कूं उद्यमसहित जे देव ते भी नाहीं राखि सकै हैं. अन्य कौन राखै ॥

फेरि विशेष कहै हैं,—

सुरासुरनराहीन्द्रनायकैरपि दुर्द्धरा ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषार्थ—यह कालकी पाश है सो देव दानव मनुष्य धरणीश्वर इनके नायक इन्द्र हैं तिनिकरि भी दुर्द्धर है नि-वारी न जाय है ऐसी है. जीवनिकुं अर्धक्षणमात्रमैं बां-ध ले है याकूं कोई निवारि सकै नाहीं ॥

अब कहै हैं यह काल अद्वितीय सभट है,—

जगत्रयजयी वीर एक एवान्तकः क्षणे।
इच्छामात्रेण यस्यैते पतन्ति त्रिदशेश्वराः ॥ ४ ॥

भाषार्थ—यह काल है सो तीन जगतका जीतनेवाला सु-भट है सो अद्वितीय है, जाकी इच्छा मात्रकरि एक क्षणमें ए देवनिके इन्द्र हैं ते भी पडैं हैं च्युत होय हैं तहां अन्यकी कहा कथा? ॥

आगैं कहै हैं जे मृत्यु प्राप्त भयेका शोक करै हैं ते मूर्ख हैं,—

शोच्यन्ते स्वजनं मूर्खाः स्वकर्मफलभोगिनम्।
नात्मानं बुद्धिविध्वंसा यमदंष्ट्रान्तरस्थितम् ॥ ५ ॥

भाषार्थ—बुद्धिका है विध्वंस जिनिकै ऐसे मूर्ख प्राणी हैं ते अपने कर्मका फल भोगनेवाला जो स्वजन कुटुंबका जब आयुकर्म भोगि मरणकूं प्राप्त भया ताका शोक करै है अर अपना आतमा कालकी दाढिके मध्य प्राप्त है ताका शौच नाहीं करै है यह बडी मूर्खता है ॥

फेरि कहै हैं पूर्वें बडे बडे पुरुष प्रलय भये हैं,—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यस्मिन्संसारकान्तारे यमभोगीन्द्रसेविते।
पुराणपुरुषाः पूर्वं मनन्ताः प्रलयं गताः ॥ ६ ॥

भावार्थ—कालस्वरूप सर्पकरि सेवित यह संसार रूपवन है या विषै पहिलैं अनन्ता पुराण पुरुष कहिये सलाकापुरुष प्रलयकूं प्राप्त भये तिनिकूं विचारतैं शोक करना वृथा है॥

फेरि कालका प्रबलपणा दिखावे हैं,—

प्रतीकारशतेनापि त्रिदशैर्न निवार्यते।
यत्रायमन्तकः पापी नृकीटैस्तत्र का कथा ॥ ७ ॥

भावार्थ—यहकाल है सो पापस्वरूप है सो जहां देवनिकरि सैंकड़ां इलाजनिकरि भी नाहीं निवार्या जाय है तहां मनुष्य कीड़ेकी कहा कथा है? काल दुर्निवार है ॥

फेरि कहै हैं,—

गर्भादारभ्य नीयन्ते प्रतिक्षणमखण्डितैः।
प्रयाणैः प्राणिनो मूढ कर्मणा यममन्दिरं ॥ ८ ॥

भावार्थ—हे मूढ प्राणी! यह आयुनामा कर्म है ताकरि सर्व प्राणी गर्भतैं लगाय अर क्षणक्षणप्रति अखंडित निरंतर प्रवाहरूप प्रयाणनिकरि यममन्दिरकूं प्राप्त कीजिये हैं तिनकूं देखि ॥

फेरि कहै हैं,—

यदि दृष्टः श्रुतो वास्ति यमाज्ञावञ्चको बली।
तमाराध्य भज स्वास्थ्यं नैव चेत्किं वृथा श्रमः॥९॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषार्थ—हे प्राणी ! जो कोई बलवान् कालकी आज्ञा लोपनेवालो तैं देख्यो होय तथा सुण्यो होय ताकूं तू आराध्य अर स्वास्थ्यकूं सेय, नम्रीभूत होय तिष्ठि. अर जो ऐसा देख्या सुण्या न होय तौ तेरा खेद करना वृथा है ॥

फेरि कहै हैं,—

परस्येव न जानाति विपत्तिं स्वस्य मूढधीः ।
वने सत्त्वसमाकीर्णे दह्यमाने तरुस्थवत् ॥ १० ॥

भाषार्थ—यह मूढबुद्धि पुरुष जैसैं परके जाणै तैसैं आपके आपदा मरण है ताकूं न जाणै है. इहां दृष्टान्त जैसैं—बहुत जीवनिकरि भरया वन दग्ध होता होय तहां वृक्ष ऊपरि बैठा पुरुष ऐसैं देखै ये वनके जीव बलै हैं अर यह न जाणै जो यह वृक्ष बलैगा तब मैं भी या मैं बलूंगा, यह बडी मूर्खता है ॥

फेरि कहै हैं,—

यथा बालं तथा वृद्धं यथाढ्यं दुर्विधं तथा ।
यथा शूरं तथा भीरुं साम्येन ग्रसतेऽन्तकः ॥११ ॥

भाषार्थ—यह काल है सो जैसैं बालककूं ग्रसै है तैसैं ही वृद्धकूं ग्रसै है. बहुरि जैसैं धनवानकूं ग्रसै है तैसैं ही दरिद्रकूं ग्रसै है. बहुरि जैसैं सूरवीरकूं ग्रसै है तैसैं ही कायरकूं ग्रसै है ऐसैं सर्वकूं समानभावकरि ग्रसै है. याकै हीनाधिक कोऊ नाहीं, याहीतैं याका नाम समवर्त्ती कहिये है ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अब कहे हैं याकूं कोई निवारनेवाला भी नाहीं है,—

गजाश्वरथसैन्यानि मन्त्रौषधबलानि च ।
व्यर्थी भवन्ति सर्वाणि विपक्षे देहिनां यमे ॥१२॥

भाषार्थ—इस कालकूं प्राणीनिके प्रतिकूल होतैं हाथी घोड़ा रथ सेन्या बहुरि मंत्र औषध पराक्रम ए सर्व वृथा होय हैं. काल आय पूरा होय तब कोई भी निवारि सकै नाहीं. यह प्राणी वृथा ही शरण हेरै है ॥

फेरि कहै हैं,—

विक्रमैकरसस्तावज्जनः सर्वोऽपि वल्गति ।
न शृणोत्यदयं यावत्कृतान्तहरिगर्जितम् ॥१३॥

भावार्थ—यह सर्व ही जन पराक्रमका है अद्वितीय रस जाकै ऐसा उद्धत हुवा तेतै ही दौड़ै है कूदै है जेतै कालरूपी सिंहकी दयारहित जैसैं होय तैसैं गर्जना नाही सुणै है. काल आया यह शब्द सुणतै ही सर्व भूलि जाय है ॥

फेरि कहै हैं—

अकृताभीष्टकल्याणमसिद्धारब्धवाञ्छितम् ।
प्रागेवागत्य निस्त्रिंसो हन्ति लोकं यमः क्षणे ॥१४॥

भावार्थ—यह काल है सो ऐसा निर्दयी है जो नाहीं किया है अपना बांछित भला कल्याणरूप कार्य जानै अर नाहीं पूर्ण भया है आरंभ्या कार्य जाकै ऐसा लोककूं पहिले ही आयकरि क्षणमात्रमैं हणै है. लोकके कार्य जसक तैसैं रहि जाय हैं बीचि ही मरण होय जाय है ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फेरि प्राणीनिके अज्ञानकूं दिखावै हैं,—

स्रग्धराछन्दः ।

भ्रूभङ्गारम्भभीतं स्खलति जगदिदं ब्रह्मलोकावसानं
सद्यस्त्रुट्यन्ति शैलाश्चरणगुरुभराक्रान्तधात्रीवशेन ।
येषां तेऽपि प्रवीराः कतिपयदिवसैः कालराजेन सर्वे
नीता वार्तावशेषं तदपि हतधियां जीवितेऽप्युद्धताशा
॥ १५ ॥

भावार्थ—जिसकाल रूपी राजाकरि ऐसे सुभट भी केतेक दिननिकरि सर्व वार्तावशेष कहिये जिनकी वार्त्ता मात्र ही सुणिये हैं अन्य किछू भी न रह्या तो हू हीनबुद्धि प्राणिनिके जीवनेविषै बडी आशा वर्तै है, यह बडी भूलि है. ते सुभट कैसे थे? जिनकी भ्रूके भंगके आरंभमात्रकरि भयरूप भया यह जगत ब्रह्मलोकपर्यन्त चलायमान होय जाय. बहुरि जिनके चरणके बडे भारकरि दबी जो पृथ्वी ताके वशकरि पर्वत खंड खंड तत्काल होय जाय ऐसे सुभट भी कालने खाये तो अन्यके जीवनेमें कहा आशा?

शार्दूलविक्रीडितम् ।

रुद्राशागजदेवदैत्यखचरग्राहग्रहव्यन्तरा
दिक्पालाः प्रतिशत्रवो हरिबला व्यालेन्द्रचक्रेश्वराः।
ये चान्ये मरुदर्यमादिबलिनः संभूय सर्वे स्वयम्
नारब्धं यमकिङ्करैः क्षणमपि त्रातुं क्षमा देहिनः॥१६॥

भावार्थ—रुद्र दिग्गज देव दैत्य विद्याधर जलदेवता ग्रह व्यन्तर दिक्पाल प्रतिनारायण नारायण बलभद्र धरणीन्द्र

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चक्रवर्ति ए सर्व अर अन्य भी पवन देव सूर्यकों आदिदें बलवान सारे देहधारी आय भेले होयकरि कालके किंकर जे कालकी कला तिनिकरि आरंभ्या पकड़्या जो प्राणी ताकूं राखवेकूं क्षणमात्र भी समर्थ नाहीं है. भावार्थ—कोई जानैगा कि मरणतैं राखनेवाला जगतमें कोई तो होयगा सो यह विचार मिथ्या है यातैं राखनेवाला कोई भी नाहीं है ॥

फेरि उपदेश दे हैं,—

आरब्धा मृगबालिकेव विपिने संहारदन्तिद्विषा
पुंसां जीवकलानिरेति पवनव्याजेन भीतासती ।
त्रातुं न क्षमसे यदि क्रमपदप्राप्तां वराकीमिमां
न त्वं निर्घृण लज्जसेऽत्र जनने भोगेषु रन्तुंसदा॥ १७॥

भाषार्थ—हे मूढप्राणी! जैसैं उद्यान—वनविषै मृगकी बचडीकूं (बालहिरणीकूं) सिंह पकड़नेका आरंभ करै है तब वह भयकारि भागै, तैसैं प्राणीनिके जीवनकी कला कालरूप सिंहतैं भयवान् भई उच्छ्वासके मिसकारि बाहिर निकसै है. वह मृगकी बचडी सिंहके पगतलैं आय जाय तैसैं यह पुरुषनिके जीवनकी कला कालके अनुक्रमकारि अंतकूं प्राप्त भई सो तू इस निर्बलकूं राखनेकूं नाही समर्थ है. अर हे निर्दयी तू या जगतविषै भोगनिविषै रमनेकूं उद्यमी होय प्रवर्तै है अर लज्जायमान न होय है सो यह बडा निर्दयीपणा है सत्पुरुष करुणावाननिकी यह प्रवृत्ति होय है जो काहू असमर्थकूं समर्थ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दबावै तब सर्व अपना काम छोडि ताकी सहायका विचार करै सो यह प्राणी कालकरि हणते प्राणीनिकूं देखिकर भी भोगनिमैं रमै है सो यह निर्दयी है अर निर्लज्ज है ॥

स्रग्धरा छन्द ।

पाताले ब्रह्मलोके सुरपतिभवने सागरान्ते वनान्ते
दिक्चक्रे शैलशृङ्गे दहनवनहिमध्वान्तवज्रासि दुर्गे ।
भूगर्भे सन्निविष्टं समदकरिघटा संकटे वा बलीयान्
कालोऽयं क्रूरकर्मा कवलयति बलाज्जीवितं देहभाजाम्

भाषार्थ—यह काल है सो क्रूरकर्मा है दुष्ट है अर बलवान है दुर्निवार है सो प्राणीनिका जीवित है ताहि जबरीतैं ग्रासीभूत करै है. पातालविषै ब्रह्मलोकविषै इन्द्रके भवनविषै समुद्रके अन्तविषै बनके अन्तविषै दिशानिके समूहविषै पर्वतके शिखरविषै, अग्निविषै जलविषै पालाविषै अन्धकारविषै वज्रमयी स्थानविषै षड्गके निवासविषै गढकोटविषै भूमिके गर्भविषै मदसहित हस्तीनिकी घटाका संघट्टविषै इत्यादि स्थाननिविषै नीकैं (भले प्रकार) यत्नसे बैठे हुयेकूं भी ग्रासित करै है. या काल आगैं कहूं ही बचै नाहीं ॥

अब अशरण भावनाका वर्णन पूरा करै हैं तहां संक्षेपकरि कहै हैं,—

शार्दूलविक्रीडित छन्दः ।

अस्मिन्नन्तकभोगिवक्त्रविवरे संहारदंष्ट्राङ्किते
संसुप्तं भुवनत्रयं स्मरगरव्यापारमुग्धीकृतम् ।

१ हिम.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रत्येकं गिलतोऽस्यनिर्दयधियः केनाप्युपायेन वै
नास्मान्निःसरणं तवार्य कथमप्यत्यक्षबोधं विना॥१९॥

भाषार्थ—हे आर्य सत्पुरुष ! इस कालरूपी सर्पके मुखछिद्र विषै तीन भुवनके प्राणी निःशंक सोवै है कैसा है कालसर्पका-मुख ? अन्त समयरूप दाढकरि चिह्नित है–युक्त है. बहुरि कैसा है ? भुवनत्रयका प्राणी कामरूप जहरका व्यापार फै-लना ताकरि मूर्ख मोहरूप होय निःशंक सोवै है. तहां न्यारे न्यारे प्राणीनिकूं गिलता जो यह निर्दयबुद्धिकाल ताके इस मुखतैं तेरै निकसना प्रत्यक्ष ज्ञान विना अन्य कोई ही उपाय करि तथा कोई ही प्रकारकरि नाहीं है. निज ज्ञान स्वरूपका श-रणा लियां ही बचना है ऐसैं अशरणभावनाका वर्णन किया.

याका संक्षेप ऐसा–जो निश्चयकरि तौ सर्व द्रव्य अपनी अपनी शक्तिके भोगनेवाले हैं कोऊ काहूका कर्त्ता हर्त्ता नाहीं । अर व्यवहारकरि निमित्तनैमित्तिकभाव देखि यह जीव परकूं शरणा कल्पै है सो यह मोहकर्म करके उदयका माहात्म्य है तातैं निश्चय विचारिये तब तौ अपना आत्माहीका शरण है अर व्यवहारिकरि जे वीतराग भये ऐसे पंच परमेष्टी तिनिका शरण है. ते वीतरागताके कारण हैं तातैं अन्य सर्वका शरण छोडि ये दोय शरणा विचारणा ।

सोरठा–

जगमें शरणा दोय, शुद्धातम अर पंचगुरु ।
आन कल्पना होय, मोहउदय जियके मृथा ॥ २ ॥

इति अशरणानुप्रेक्षा ॥ २ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ संसारानुप्रेक्षालिख्यते ।

आगें संसारभावनाका व्याख्यान करै हैं—

चतुर्गतिमहावर्त्ते दुःखवाडवदीपिते ।
भ्रमन्ति भविनोऽजस्रं वराका जन्मसागरे ॥ १ ॥

भाषार्थ—या संसाररूप समुद्रमें प्राणी हैं ते निरन्तर भ्रमै हैं कैसा है संसारसमुद्र ? चारिगतिरूप है महा आवर्त्त कहिये भ्रमण जामें, बहुरि कैसा है ? दुःखरूप बडवानलकारि प्रज्वलित है. बहुरि प्राणी कैसे हैं ? बराक हैं, दीन हैं, अनाथ हैं सहायकरि रहित हैं ॥

उत्पद्यन्ते विपद्यन्ते स्वकर्मनिगडैर्वृताः ।
स्थिरेतरशरीरेषु संचरन्तः शरीरिणः ॥ २ ॥

भाषार्थ—ए प्राणी अपने कर्मरूप बेडीकारि युक्त भये स्थावर त्रस शरीरनिविषै संचरते उपजै हैं अर मरै हैं ॥

कदाचिद्देवगत्यायुर्नामकर्मोदयादिह ।
प्रभवन्त्यङ्गिनः स्वर्गे पुण्यप्राग्भारसंभृताः ॥ ३ ॥

भाषार्थ—कदाचित् तौ देवगति नामकर्म अर देवायुकर्मके उदयकारि इस संसारविषै ए प्राणी पुण्यकर्मके भारकरि भरे स्वर्गविषै उपजै हैं. तहां देवनिके सुखकूं पावै हैं ॥

कल्पेषु च विमानेषु निकायेष्वितरेषु च ।
निर्विशन्ति सुखं दिव्यमासाद्य त्रिदिवाश्रियम् ॥ ४ ॥

भाषार्थ—तहां देवगतिविषै कल्पवासीनिके विमाननिविषै

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बहुरि इतरनिकाय जे भवनवासी, ज्योतिषी व्यन्तर देवनिविषै देवनिकी लक्ष्मीकूं पाय देवोपनीत सुखकूं भोगवै है ॥

प्रच्यवन्ते ततः सद्यः प्रविशन्ति रसातलम् ।
भ्रमन्त्यनिलवद्विश्वं पतन्ति नरकोदरे ॥ ५ ॥

भाषार्थ—बहुरि तिस स्वर्गतैं च्युत होय है अर तत्काल पृथ्वी तलैं आवै है. तहां पवनकी ज्यों जगतमें भ्रमै हैं बहुरि नरकमें प्रवेश करै हैं ॥

विडम्बयत्यसौ हन्त संसारसमयान्तरे ।
अधमोत्तमपर्यायैर्नियोज्य प्राणिनाङ्गणम् ॥ ६ ॥

भाषार्थ—आचार्य खेदकारि कहै है जो अहो ! देखो ! यह संसार है सो प्राणीनिके समूहकूं समयान्तरविषै नीची ऊंची पर्याय करि जोडि विडंबनारूप करै है. जीवके स्वरूपको अनेकप्रकार विगाड़ै है. ॥

स्वर्गी पतति साक्रन्दं श्वा स्वर्गमधिरोहति ।
श्रोत्रियः सारमेयः स्यात् कृमिर्वा स्वपचोऽपि वा ॥७॥

भाषार्थ—अहो देखो ! स्वर्गका देव है सो तौ आक्रन्द सहित रोवता पुकारता स्वर्गतैं नीचैं पड़ै है. बहुरि स्वान-कूकरा है सो स्वर्गमें जाय देव होय है. बहुरि श्रोत्रिय कहिये क्रियाकाण्डका अधिकारी अस्पर्श रहनेवाला ब्राह्मण है सो स्वान-(कूकरा) होय है. अथवा लट होय है अथवा चांडाळ होय है यह संसारकी विटंबना है ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रूपाण्येकानि गृह्णाति त्यजत्यन्यानि सन्ततम् ।
यथा रङ्गेऽत्र शैलूषस्तथायं यन्त्रवाहकः ॥८॥

भाषार्थ—यह यन्त्रवाहक कहिये प्राणी है सो संसारविषै कई एक रूपकूं तो ग्रहण करै है अर कई अन्यकूं छोडै है ऐसें निरन्तर अन्य अन्य स्वांग धारै है. जैसैं नृत्यके अखाड़ेमैं नाचनेवाला स्वांग धारै है तैसैं। या प्रकार संसारकी रीति है ॥

सुतीव्रासातसन्तप्ताः मिथ्यात्वातङ्कतर्किताः ।
पञ्चधा परिवर्त्तन्ते प्राणिनो जन्मदुर्गमे ॥९॥

भाषार्थ–या संसाररूप दुर्गम वनविषै प्राणी हैं ते मिथ्यात्वरूप आतंक दाहरोगकरि शंकित अतिशयरूप तीव्र असाता दुःखकरि अत्यन्त तप्तायमानभये पंचप्रकार परिवर्त्तनकरि भ्रमै हैं. अनेकबार अन्य अन्य पर्याय धारै हैं॥

आगें तिनि पंचप्रकारनिकूं कहे हैं,—

द्रव्यक्षेत्रे तथा कालभवभावविकल्पतः ।
संसारो दुःखसंकीर्णः पञ्चधेति प्रपञ्चितः॥१०॥

भाषार्थ—द्रव्य क्षेत्र तथा काल भव भावके भेदतैं यह संसार है सो पंचप्रकार विस्ताररूप कह्या है, सो कैसा है? दुःखनिकरि व्याप्त है इनि पंचप्रकार परिवर्त्तनका स्वरूप विस्तारतैं अन्यशास्त्रनितैं जानना ॥

फेरि कहै हैं.—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सर्वैः सर्वेऽपि संबन्धाः संप्राप्तादेहधारिभिः ।
अनादिकालसम्भ्रान्तैस्त्रसस्थावरयोनिषु॥ ११॥

भावार्थ—या संसारविषै देहधारीविषै जेते परस्पर संबंध हैं ते ते सर्व ही पाये हैं. पिता माता पुत्र स्त्री भाई इत्यादि संबंध हैं तिनिकूं अनंतबार पाये ऐसा न रह्या है जो न पाया ॥

देवलोके नृलोके च तिरश्चि नरकेऽपि च ।
न सा योनिर्न तद्रूपं न तद्देशो न तत्कुलं॥१२॥
न त दुःखं सुखं किंचिन्नपर्यायः स विद्यते ।
यत्रैते प्राणिनः शश्वत् यातायातैर्न खण्डिताः॥१३

भाषार्थ–या संसारविषै देवलोकविषै, बहुरि मनुष्य लोकविषै, बहुरि तिर्यञ्चलोकविषै बहुरि नरकविषै सो योनि नाहीं, सो रूप नाहीं, सो देश नाहीं, सो कुल नाही, सो दुःख नाही. बहुरि सो सुख किछू नाहीं सो पर्याय नाहीं जहाँ ए प्राणी निरंतर गमन आगमनकरि भेदरूप नाही भये हैं. **भावार्थ**–सर्व ही अवस्था अनेकबार भोगवैं है विना भोग्या किछू भी नाहीं है ॥

न के बन्धुत्वमायाताः न के जातास्तव द्विषः ।
दुरन्तागाधसंसारपङ्कमग्नस्य निर्दयम् ॥ १४ ॥

भाषार्थ—हे प्राणी ! या संसाररूपदुरंत अथाह कर्दमविषै डूब रह्या जो तू तहां कोई रक्षक नाही ऐसैं निर्दय जैसैं होय तैसैं तेरा बंधु पणाकूं कौन नाहीं प्राप्त भये? सर्व ही हितू भये बहुरि शत्रु कौन २ न भये? सर्वही भये. यह मति जानै जो शत्रुमित्रपणा किछू और होना रह्या है ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भूपः कृमिर्भवत्यत्र कृमिश्चामरनायकः।
शरीरी परिवर्त्तेत कर्मणा वञ्चितो बलात् ॥१५॥

भाषार्थ—या संसारविषै प्राणी कर्मकरि ठग्या वश हुवा राजा तौ मरि लट होय है अर लट मरिकारि अनुक्रमतैं परंपरा देवनिका इन्द्र होय जाय है. ऐसें पलटिबो करै है. किछू नियामक नहीं है ॥ १५ ॥

माता पुत्री स्वसा भार्या सैवसम्पद्यतेऽङ्गिजा।
पिता पुत्रः पुनः सोऽपि लभते पौत्रिकं पदम् ॥१६॥

भाषार्थ—या संसार विषै प्राणीकी माता तौ मरिकारि पुत्री हो जाय है अर बहण मरिकरि स्त्री होय जाय है. बहुरि सो स्त्री ही मरिकारि आपकै पुत्री होय जाय है. बहुरि पिता तै मरिकारि आपके पुत्र होय जाय है अर फेरि सो ही मरि पुत्रकै पुत्र हो जाय है. ऐसें पलटि २ हूवा करै है ॥

अब संसारभावनाकूं पूर्ण करै हैं तहां सामान्यकरि कहै हैं,—

शार्दूलविक्रीडितछन्द ।

श्वभ्रे शूलकुठारयन्त्रदहनक्षारक्षुरव्याहतैस्
तिर्यक्षु श्रमदुःखपावकशिखासंभारभस्मीकृतैः।
मानुष्येऽप्यतुलप्रयासवशगैर्देवेषु रागोद्धतैः
संसारेऽत्र दुरन्तदुर्गतिमये बंभ्रम्यते प्राणिभिः ॥१७

भाषार्थ—या दुर्निवार दुर्गतिमयी संसारविषै प्राणीनिकारि भ्रमिये हैं. कैसे हैं प्राणी ? नरकविषै तौ शूली कुहाड़े घाणी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अग्नि क्षारेजलादिक क्षुर—छुरा आदिकनिकारि पीड़े घाते हुये दुःख भोगवै हैं. बहुरि कैसे हैं ? तिर्यंचनिविषै खेद दुःख अग्निकी शिखाका भारकारि भस्मरूप किये हुये पीड़ा पावै हैं. बहुरि मनुष्यनिविषै भी अतुल्य खेदके वश भये दुःख भोगवै हैं. बहुरि देवनिविषै रागकरि उद्धत भये पीड़ा पावै हैं ऐसें च्यारों ही गतिमें दुःखही पावै हैं. संसारमें कहूं सुख है नाहीं ऐसें संसारभावनाका वर्णन किया ॥

याका संक्षेप ऐसा जो संसारका कारण तौ अज्ञानभाव है ताकरि परद्रव्यनिविषै मोहरागद्वेषप्रवर्त्तै है. ताकरि कर्मबन्ध होय है. ताका फल यह च्यारि गतिनिका भ्रमण है सो कार्य है सो कारण कार्य दोऊंकूं संसार कहिये। इहां कार्यरूपसंसारका वर्णन विशेषकरि किया है जातैं व्यवहारी प्राणिके कर्यसंसारका अनुभव विशेषकरि है. परमार्थतैं अज्ञानभाव ही संसार है।

दोहा.

परद्रव्यनतैं प्रीति जो, है संसार अबोध।
ताको फल गति च्यारिमें, भ्रमण कह्यो श्रुतशोध ॥३॥

इतिसंसारानुप्रेक्षा ॥३॥

अथ एकत्वानुप्रेक्षा लिख्यते।

आगें एकत्वभावनाका व्याख्यान करै हैं तहां कहै हैं जो यह आत्मा सर्व अवस्थारूप एक ही होय है,—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महाव्यसनसंकीर्णे दुःख ज्वलनदीपिते ।
एकाक्येव भ्रमत्यात्मा दुर्गे भवमरुस्थले ॥ १ ॥

भाषार्थ—यह आत्मा बडे कष्ट आपदा करिव्याप्त अर दुःखरूप अग्निकरि प्रज्वलित ऐसा अर दुर्गम—जामैं गमन बडे दुःखसूं होय ऐसा संसाररूप मरुस्थल ताविषै एकाकी जाका दूजा कोई सहाई नाहीं ऐसैं भ्रमै है ॥

स्वयं स्वकर्मनिर्वृत्तं फलं भोक्तुं शुभाशुभम् ।
शरीरान्तरमादत्ते एकः सर्वत्र सर्वथा ॥ २ ॥

भाषार्थ—या संसारमें यह आत्मा आप ही अपने कर्म करि निपजाया जो शुभ तथा अशुभ फल ताके भोगनेंकू सर्व जायगाँ सर्व प्रकार करि एकला एक शरीरतैं अन्य शरीरकूं ग्रहण करै है. दूजा कोई नहीं है ॥ २ ॥

संकल्पानन्तरोत्पन्नं दिव्यं स्वर्गसुखामृतम् ।
निर्विशन्त्ययमेकाकी स्वर्गश्रीरञ्जिताशयः ॥ ३ ॥

भाषार्थ—बहुरि यह आत्मा एकाकी ही स्वर्गकी लक्ष्मी करि रंजायमान भया संता संकल्पमात्र चितवनमात्रकरि उपज्या देवोपनीत स्वर्गका सुखरूप अमृतकुं भोगवै है तहां भी दूजा नाहीं है ॥

संयोगे विप्रयोगे च संभवे मरणेऽथवा ।
सुखदुःखविधौ वास्य न सखान्योऽस्ति देहिनः ॥ ४ ॥

भाषार्थ—या प्राणीकै संयोगविषै तथा वियोगविषै बहुरि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जन्मविषै तथा मरणविषै बहुरि सुखदुःखकी विधिविषै अन्य–दूजा साथी नाहीं एकाकी ही भोगवै है ॥

मित्रपुत्रकलत्रादिकृते कर्म करोत्ययम् ।
यत्तस्य फलमेकाकी भुङ्क्ते श्वभ्रादिषु स्वयम् ॥५॥

भाषार्थ—यह प्राणी मित्र पुत्र स्त्री आदिके कार्यकेअर्थि जो किछु बुरेभले कार्य करै है ताका फल नरक आदि गति विषै एकाकी आप ही भोगवै है. दूजा कोई बटावै नाहीं है॥

सहाया अस्य जायन्ते भोक्तुं वित्तानि केवलम् ।
न तु सोढुं स्वकर्मोत्थां निर्दयां व्यसनावलीम् ॥६॥

भाषार्थ—यह प्राणी बुरे भले कार्यकरि धन उपार्जै है ताके भोगनेकूं तो याके साथी पुत्रमित्रादिक सर्वही होय हैं अर आप बुरे भले कर्म किये ताकरि उपजी, जाको कोउ मटनेवाला वा रक्षक नाही ऐसी नरकादिककी तथा वर्तमानकी वेदना–पीडा ताकी पंक्ति, ताकूं सहनेकू साथी कोई भी न होय है आप अकेला ही भोगवै है ॥

एकत्वं किं न पश्यन्ति जडा जन्मग्रहार्दिताः
यज्जन्ममृत्युसम्पाते प्रत्यक्षमनुभूयते ॥ १४ ॥

भाषार्थ—आचार्य कहै है जो ए प्राणी संसाररूप पिशाच करि पीड़े हुये भी अपना एकपणाकूं क्यों नाही देखै है जो इस जन्म अर मरणके संपात[1]विषै प्रत्यक्ष भोगिये है. आप

१ प्राप्तहोनेपर.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रत्यक्ष जन्ममरण देखै है जो जन्मै है सो ही मरै है दूजा कोई नाही, तौऊ अपना एकपणा नाहीं देखै है सो यहु बडा अज्ञान है ॥

अज्ञातस्वस्वरूपोऽयं लुप्तबोधादिलोचनः ।
भ्रमत्यविरतं जीव एकाकी विधिवञ्चितः ॥ ८ ॥

भाषार्थ—एकपणा अपना न देखणैविषै कारण यह है जो यह प्राणी नाही जान्या है अपना स्वरूप जानै लुप्त भये हैं ज्ञानादि लोचन जाके ऐसा भया सन्ता कर्म करि ठग्या एकाकी संसारमें निरन्तर भ्रमै है. तहां अज्ञान ही कारण भया ॥

यदैक्यं मनुते मोहादयमर्थैः स्थिरेतरैः ।
तदा स्वं स्वेन बध्नाति तद्विपक्षैः शिवी भवेत् ॥९॥

भाषार्थ—यह मूढ प्राणी जिसकाल थिर अथिर पदार्थनिकरि मोहथकी अज्ञानथकी आपके एकपणा मानै है तिसकाल आप अपने आपाकूं अपने ही भावनिकरि बांधै है. अर्थात् कर्मबंधकूं करै है. अर जो अन्यतैं एकपणाकूं नाहीं मानैं है सो बंध नाहीं करै है मोक्षस्वरूप होय है कर्मनिकी निर्जरा करै है. यह एकत्व भावनाका फल है ॥

एकाकित्वं प्रपन्नोऽस्मि यदाहं वीतविभ्रमः ।
तदैव जन्मसंबन्धः स्वयमेव विशीर्यते ॥१०॥

भाषार्थ—एकत्व भावनाकरि वीत्या है विभ्रम जाका ऐसा भया सन्ता जिसकाल ऐसी भावना करै जो मै

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एकाकी पणाकूं प्राप्त हौं तिसही काल संसारका संबन्ध है सो स्वयमेव ही विशीर्णि होय जाय है छूटि जाय है ॥

संसारका संबन्ध तो मोहतैं है जब मोह जाता रहै तब आप एक है ही मोक्षकूं ही पावै ॥

अब एकत्वभावनाका वर्णन पूरा करै हैं सो सामान्यकरि कहै, हैं—

मन्दाक्रान्ता छन्दः ।

एकः स्वर्गी भवति विबुधःस्त्रीमुखाम्भोजभृङ्गः
एकः श्वाभ्रं पिबति कलिलं छिद्यमानः कृपाणैः ।
एकः क्रोधाद्यनलकलितःकर्म बध्नात्यविद्वान्
एकः सर्वावरणविगमे ज्ञानराज्यं भुनक्ति ॥११॥

अर्थ—यहु आत्मा एकही आप देवांगनाके मुखरूप-कमलनिका सुगन्ध लेनेवाला भ्रमरसारिखा देव भयासंता स्वर्गविषै जाय उपजै है. बहुरि एक ही आप कृपाण कहिये छुरी तरवारनिकरि छेद्या विदार्या नरकसम्बन्धी रुधिरकूं पीवै है. बहुरि एकही आप मूर्ख होकर क्रोधादि कषायरूप अग्निकरि ससहित हूवा कर्मनिकूं बांधै है. बहुरि एकही आप पंडित भया सन्ता सर्वकर्म आवरणका अभाव होतैसन्तै ज्ञानरूप राज्यकूं भोगवै है. **भावार्थ** आत्मा आपही एक स्वर्ग जाय है आपही नरक जाय है आप कर्म बांधै है आपही केवलज्ञानपाय मोक्ष जाय है. यह एकत्वभावनाका संक्षेप हैं.

---

१ नष्ट.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परमार्थकरि तौ आत्मा अनन्त ज्ञानादि स्वरूप आप एक है अर संसारमें अनेक अवस्था होय हैं ते कर्मके निमित्ततैं है तहां भी आप तो एक ही है दूजा तो कोई साथी है नाहीं ऐसें एकत्वभावनाका वर्णन किया ॥ ४ ॥

दोहा.

परमारथतैं आतमा, एकरूप ही जोय ।
कर्मनिमिति विकलप घने, तिनि नाशे शिव होय ॥४॥

इति एकत्वानुप्रेक्षा ॥ ४ ॥

अथ अन्यत्वानुप्रेक्षा लिख्यते.

आगैं अन्यत्वभावनाका व्याख्यान करै हैं तहां शरीरादि बाह्यवस्तूनितैं आत्माकूं परमार्थतैं न्यारा दिखावै हैं.—

अयमात्मा स्वभावेन शरीरादेर्विलक्षणः ।
चिदानन्दमयः शुद्धो बन्धः प्रत्येकवानपि ॥ १ ॥

अर्थ—यह आत्मा कर्मबन्धकी दृष्टिकरि देखिये तब बन्ध अर आप एकरूप है तौऊ अपने स्वभावकी दृष्टितैं देखिये तब शरीरादिकतैं विलक्षण चैतन्य अर आनंदमयी शुद्ध परद्रव्यनितैं अन्य है.

अचिच्चिद्रूपयोरैक्यं बन्धमति न वस्तुतः ।
अनादिश्चानयोः श्लेषः स्वर्णकालिकयोरिव ॥ २ ॥

अर्थ—अचेतनकै अर चेतनकै बन्धदृष्टिकरि एकपणा है अर बस्तुतैं देखिये तब दोऊं न्यारे न्यारे वस्तु हैं एकपणा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नाही है दोऊनिका अनादिकालमें एकक्षेत्रावगाहरूप संश्लेष है मिलाप है जैसें सुवर्णकै अर कालिमाकै खानितैं लगाय एकपणा है तैसें एकपणा है वस्तु न्यारे न्यारे हैं तैसें जानू॥

इहमूर्त्तममूर्त्तेन चलेनात्यन्तनिश्चलं।
शरीरमुह्यते मोहाच्चेतनेनास्तचेतनम्॥ ३॥

अर्थ—इस जगतमैं मूर्त्तीक अर अति निश्चल अर चेतनारहित जड़ जो यह शरीर सो अमूर्त्तीक अर चलनेवाला चेतन जो जीव ताकरि मोहतैं वाहिये है चलाइये है. भावार्थ—जीवअमूर्त्तीक चेतन है अर मोहतैं इच्छाकरि चलनेका स्वभावयुक्त है. अर शरीर मूर्त्तीक है अचेतन है चालनेकी इच्छारहित है तातैं चल नाहीं है, ताकूं जीव लियां फिरै है जैसें मुरदाकूं जीवता पुरुष लियां फिरै तैसें लियां फिरै है तहां यह जीवकै अज्ञान है॥

अणुप्रचयनिष्पन्नं शरीरमिदं मङ्गिनाम्।
उपयोगात्मकोऽत्यक्षः शरीरी ज्ञानविग्रहः॥४॥

अर्थ—प्राणीनिकै यह शरीर है सो तो पुद्गल परमाणूनका समूहकरि निपज्या है. बहुरि यह शरीरी आत्मा है सो उपयोगस्वरूप है सो अतीन्द्रिय है इन्द्रियगोचर नाही. कैसा है? ज्ञानही है शरीर जाकै ऐसें शरीर अर आत्मा अन्य अन्य है इनिकै अत्यन्त भेद है॥

अन्यत्वं किं न पश्यन्ति जडा जन्मग्रहार्दिताः।
यज्जन्ममृत्युसंपाते सर्वेणापि प्रतीयते॥ ५॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अर्थ—ऐसे पूर्वोक्त प्रकार शरीर अर जीवकै अन्यपणा है ताकूं ए संसाररूप पिशाचकरि पीडे मूर्ख प्राणी क्यों नाही देखै है? जो यह अन्यपणा जन्म अर मरणकरि संपातविषै सर्वलोककै प्रतीतिमैं आवै है. जन्म्या तब शरीरकूं लार ल्याया नाही मर्‍या तब लार ले गया नाहीं ऐसैं शरीरतैं जीवकै अन्यपणा प्रतीतिसिद्ध है ॥

मूर्त्तैर्विचेतनैश्चित्रैः स्वतन्त्रैः परमाणुभिः।
यद्वपुर्विहितं तेन कः संबन्धस्तदात्मनः ॥ ६ ॥

भाषार्थ—मूर्तीक अर चेतनारहित अर अनेकप्रकारके पुद्गल परमाणूनिनै स्वतंत्र होयकरि जो शरीर रच्या तौ तिस शरीरकरि आत्माकै कहा सम्बन्ध होय सो विचारो! तहाँ विचार किये किछू भी सम्बन्ध नाहीं ॥

ऐसैं शरीरतैं अन्यपणा दिखाया तैसैं ही अन्य वस्तु करि अन्यपणा दिखावै हैं,—

अन्यत्वमेव देहेन स्याद्भृशं यत्र देहिनः।
तत्रैक्यं बन्धुभिः सार्द्धं बहिरङ्गैः कुतो भवेत् ॥७॥

भाषार्थ—ऐसें पूर्वोक्त प्रकार जहां देहकरि सहित ही प्राणीके अत्यन्त अन्यपणा है तौ बहिरंग जे बन्धु भाई कुटुंबादिक तिनिकरि सहित एकपणा काहेतैं होय? ते तौ प्रत्यक्ष अन्य हैं ही ॥

लार-पीछें व साथ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ये ये सम्बन्धमायाताः पदार्थाश्चेतनेतराः ।
ते ते सर्वेऽपि सर्वत्र स्वस्वरूपाद्विलक्षणः ॥८॥

भाषार्थ—या जगतमें जे जे चेतन अर जड़ पदार्थ या प्राणीकै सम्बंधस्वरूप भये, ते ते सर्व ही सर्व जांयगां अपने स्वरूपसूं विलक्षण हैं आप आत्मा सर्वतैं अन्य है ॥

पुत्रमित्रकलत्राणि वस्तूनि च धनानि च ।
सर्वथान्यस्वभावानि भावयत्वं प्रतिक्षणं ॥ ९ ॥

भाषार्थ—हे आत्मन्! या जगत्में पुत्र मित्र स्त्री अन्य वस्तु तथा धन तिनिकूं तू सर्वप्रकारकरि अन्यस्वभाव निरन्तर भाय, इनिविषै एकपणाकी भावना कब हू मति करै ऐसा उपदेश है ॥

अन्यः कश्चिद्भवेत्पुत्रः पितान्यः कोऽपि जायते ।
अन्येन केनचित्सार्द्धं कलत्रेणानुयुज्यते ॥१०॥

भाषार्थ—या जगतमें कोई और ही तौ पुत्र होय है. बहुरि कोई और ही पिता उपजै है. बहुरि अन्य कोई करि सहित स्त्रीका सम्बंध होय है. ऐसें सर्व ही अन्य अन्य संबंध होय हैं ॥

त्वत्स्वरूपमतिक्रम्य पृथक्पृथक्व्यवस्थिताः ।
सर्वेऽपि सर्वथा मूढ भावास्त्रैलोक्यवर्तिनः ॥११॥

भाषार्थ—हे मूढ प्राणी! तीनलोकवर्ती सर्व ही पदार्थ हैं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ते तेरे स्वरूपकुं उलंघ्यकरि जे अंगीकारकरि न्यारे न्यारे तिष्टे हैं तिनिकूं अन्य ही भाय ॥

अब अन्यत्वभावनाका कथनकूं पूर्ण करै है तहाँ सामान्य करि उपदेश करै हैं—

शार्दूलविक्रीडितच्छन्दः ।

मिथ्यात्वप्रतिबद्धदुर्णयपथभ्रान्तेन बाह्यानलं भावान्स्वान्प्रतिपद्य जन्मगहने खिन्नं त्वया प्राक्चिरं । संप्रत्यस्तसमस्तविभ्रमभराश्चिद्रूपमेकं परं स्वस्थं स्वं प्रविगाह्य सिद्धिवनितावक्त्रं समालोकय ॥ १२ ॥

भावार्थ—हे आत्मन् ! तू या संसाररूप गहन वनविषै मिथ्यात्वकरि संबंधरूप भई जो सर्वथा एकान्तरूप दुर्नय ताका मार्गविषै भ्रमरूप भयासन्ता बाह्य पदार्थनिकूं अत्यर्थपणै अपने मानि अंगीकारकरि पहिले चिरकाल खेद खिन्न भया. अब अस्तभया है समस्त विभ्रमभार जाका ऐसा भया तू अपना आत्मा आपहीविषै तिष्ट्या ऐसा एक उत्कृष्ट चैतन्यरूप ताहि अवगाहन करि, तामैं लीन होय करि अर मुक्तिरूपी स्त्रीका मुख है ताहि अवलोकन करि देखि. **भावार्थ**—यह आत्मा अनादितैं पर भावनिकूं अपने मानि तिनिमैं रमै है यातैं संसारमैं भ्रमै है ताकूं उपदेश किया है जो परभावनितैं न्यारा अपना चैतन्य भावमें लीन होय अर मुक्ति प्राप्त हो हु. यह अन्यत्व भावनाका उपदेश है. ऐसैं अन्यत्वभावनाका कथन पूरा किया ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

याका संक्षेप यह जो या लोकमें सर्व द्रव्य अपनी २ सत्ताकूं लिये न्यारे न्यारे हैं, कोऊ काहूरूप होय नाहीं. अर परस्पर निमित्त नैमित्तिक भावकरि किछू कार्य होय है ताके भ्रमकरि यह प्राणी अहंकार ममकार परविषै करै है तहां जब अपना स्वरूप अन्य जानै तब अहंकार ममकार अपना आपमें होय तब परका उपद्रव आपकै न आवै. यह अन्यत्वभावना है ॥ ९ ॥

दोहा.

अपने अपने सत्त्वकूं, सर्व वस्तु विलसाय।
ऐसें चितवै जीव तब, परतैं ममत न थाय ॥ ५ ॥

इति अन्यत्वानुप्रेक्षा ॥ ५ ॥

अथ अशुचित्वानुप्रेक्षा लिख्यते ।

आगें अशुचि भावनाका व्याख्यान करै हैं तहां शरीरका अशुचिपणा दिखावै हैं,—

निसर्गगलिनं निन्द्यमनेकाशुचिसंभृतम् ।
शुक्रादिबीजसंभूतं घृणास्पदमिदं वपुः ॥ १ ॥

भावार्थ—या संसारमें यह प्राणीनिका शरीर है सो प्रथम तौ स्वभावहीकरि गलनेरूप है. बहुरि निंदवे योग्य है. बहुरि अनेक अशुचि धातु उपधातूनिकरि भर्या है. बहुरि शुक्र रुधिरबीजकरि उपज्या है ऐसा है तातैं गिलानिका स्थानक है ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

असृग्मांसवसाकीर्णं शीर्णं कीकसपञ्जरं ।
शिरानद्धं च दुर्गन्धं क शरीरं प्रशस्यते ॥ २ ॥

भाषार्थ—बहुरि यह शरीर कैसा है ? रुधिर मांस वसा (चरबी) इनिकरि तौ व्याप्त है. बहुरि शीर्ण है सिड़ि रह्या है. बहुरि हाडनिका पंजर है. बहुरि शिरा जे नश तिनिकरि बंध्या है ऐसें सर्वप्रकार दुर्गन्धमयी है. आचार्य कहै हैं, कि—यह शरीर कौन ठिकाणै सराहिये है? सर्व जायगां निन्द्य ही है ॥

प्रस्रवन्नवभिर्द्वारैः पूतिगन्धान्निरन्तरम् ।
क्षणक्षयं पराधीनं शश्वन्नरकलेवरम् ॥ ३ ॥

भाषार्थ—यह मनुष्यनिका शरीर है सो नवद्वारनिकरि तौ निरन्तर दुर्गन्धरूप झरता रहै है. बहुरि क्षणक्षयी है थिर नाही. बहुरि पराधीन है अन्नपाणी आदिका सहाय निति चाहै है ऐसैं निरन्तर अपवित्र है ॥

कृमिजालशताकीर्णे रोगप्रचयपीडिते ।
जराजर्जरिते काये कीदृशी महतां रतिः ॥ ४ ॥

भाषार्थ—यह काय कैसा है ? लट कीड़ेनिके समूहके सैंकड़ेनिकरि तौ भर्या है बहुरि रोगानिके समूहनिकरि पीडित है. बहुरि जरा वृद्धअवस्थाकरि जर्जरा भया है ऐसा कायविषै महन्त पुरुषनिकै कैसैं रति होय ? महतपुरुष यासूं रति नाही करै है ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यद्यद्वस्तु शरीरेऽत्र साधुबुद्ध्या विचार्यते ।
तत्तत्सर्वं घृणां दत्ते दुर्गन्धामेध्यमन्दिरे ॥ ५ ॥

भाषार्थ--इस शरीरविषै जो जो वस्तु है सो सो भलेप्रकार बुद्धिकरि विचारिये तब ग्लानिका ठिकाणा है जातैं यह शरीर दुर्गन्ध जो विष्टा ताका मंदिर है यामैं किछू भी पवित्र नाहीं ॥

यदीदं शोध्यते दैवाच्छरीरं सागराम्बुभिः ।
दूषयत्यपि तान्येव शोध्यमानमपि क्षणे ॥ ६ ॥

भाषार्थ—जो इस शरीरकूं दैवयोगतैं समुद्रके जल करि भी शुद्ध कीजिये तौ शोध्या हुवा तिस ही क्षणमें तिनि समुद्रके जलनिकूं भी दूषण लगावै है अपवित्र दुर्गन्ध करै है. अन्यवस्तुकी कहा कथा ?

कलेवरमिदं न स्याद्यदि चर्मावगुण्ठितम् ।
मक्षिकाकृमिकाकेभ्यः स्यात्त्रातुं कस्तदा प्रभुः ॥ ७ ॥

भाषार्थ—यह शरीर जो बाहिर चर्मकरि ढक्या न होय तौ मांखी कीड़ा लट कागले इनितैं रक्षा करने कूं कौन समर्थ होय ? न होय। ऐसे शरीरकूं देखि सत्पुरुष दूरितैं छोडै तब रक्षा कौन करै ?

सर्वदैव रुजाक्रान्तं सर्वदैवाशुचेर्गृहम् ।
सर्वदापतनप्रायं देहिनां देहपञ्जरम् ॥ ८ ॥

भाषार्थ—यह प्राणीनिका देहरूप पींजरा है सो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कैसा है सदा ही तौ रोगकरि व्याप्त है अर सदा ही अशुचिका घर है अर सदा ही पड़नेके स्वभावरूप है. यह मति जानुं जो कोई काल तो भला होगा ॥

तैरेव फलमेतस्य गृहीतं पुण्यकर्मभिः ।
विरज्य जन्मनः स्वार्थे यैः शरीरं कदर्थितम् ॥ ९ ॥

भाषार्थ—इस शरीरके पावनेका फल तिनिनैं लिया जे संसारतैं विरक्त होयकरि आत्मकल्याण निमित्त इस शरीरकूं पुण्यकार्यकरि क्षीण किया ॥

शरीरमेतदादाय त्वया दुःखं विसह्यते ।
जन्मन्यस्मिँस्ततस्तद्धि निःशेषानर्थमन्दिरम् ॥ १० ॥

भाषार्थ—हे आत्मन् ! तैं या शरीरकूं ग्रहणकरि इस संसारविषै दुःखकूं पाया सह्या तातैं निश्चयकरि यह जानि जो यह शरीर समस्त दुःखनिका मन्दिर है याके संगतैं सुखका लेश भी मति जानै ॥

भवोद्भवानि दुःखानि यानि यानीह देहिभिः ।
सह्यन्ते तानि तान्युच्चैर्वपुरादाय केवलम् ॥ ११ ॥

भाषार्थ—या संसारविषै प्राणीनिकरि जे जे संसारतैं उपजे दुःख सहिये हैं ते ते सर्व अतिशयकरि केवल एक शरीरकूं ग्रहणकरि सहिये हैं, यातैं निवृत्ति भये पीछें दुःख नाहीं है ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आर्याछन्दः ।

कर्पूरकुंकुमागुरुमृगमदहारिचन्दनादिवस्तूनि ।
भव्यान्यपि संसर्गान्मलिनयति कलेवरं नृणाम् ॥१२

भाषार्थ—कपूर केशरि अगुरु कस्तूरी हरिचन्दन इत्यादि सुगन्ध वस्तु हैं ते भले सुन्दर हैं तिनिकूं भी यह मनुष्यनिका शरीर है सो संसर्गतैं मलिन करै है. आप तो मलिन है ही परन्तु संसर्गतैं भली वस्तूनिकूं भी मलिन करै है यह अधिकता है ॥

अब अशुचि भावनाका कथनकूं पूर्ण करै हैं तहां सामान्यकरि कहै हैं,—

मालिनीछन्दः ।

अजिनपटलगूढं पञ्जरं कीकसानाम्
कुथितकुणिपगन्धैः पूरितं मूढ गाढं ।
यमवदननिखिन्नं रोगभोगीन्द्रगेहम्
कथमिह मनुजानां प्रीतये स्याच्छरीरम्॥१३॥

भाषार्थ—हे मूढ प्राणी! इस संसारविषै यह मनुष्यनिका शरीर है सो कैसा है, चर्मके पटलकरि तौ ढक्या है बहुरि हाडनिका पींजरा है. बहुरि बिगडी राधिकी दुर्गन्ध करि पूर्ण गाढा अतिशयकरि भरचा है. बहुरि कालके मुखविषै बैठा है बहुरि रोगरूप सर्पनिका घर है. ऐसा है तो ऊ प्रीतिकै अर्थि कैसैं है? यह अचिरज है। ऐसैं अशुचि भावनाका वर्णन कीया ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

याका संक्षेप ऐसा जो आत्मा तौ निर्मल है अमूर्तीक है ताकै मल नहीं. अर कर्मके निमित्ततैं याकै शरीरका सम्बन्ध है. ताकूं अज्ञान मोहकरि अपनाय भला जानै है. अर यह मनुष्यका शरीर है सो सर्वप्रकार अपवित्रताका निवास है तातैं याविषै अशुचिभावना भावै तव यातैं वैराग्य होय अपना निर्मल आत्मस्वरूपविषै रमनेकी रुचि होय यह अशुचिभावनाके वर्णनका आशय है. ॥

दोहा.

निर्मल अपना आत्मा, देह अपावन गेह ।
जानि भव्य निजभावकूं, यासूं तजो सनेह ॥६॥

इति अशुचित्वानुप्रेक्षा ॥ ६ ॥

अथ आस्रवानुप्रेक्षा लिख्यते ।

आगें आस्रवभावनाका व्याख्यान करै हैं तहां आस्रवका स्वरूप कहै हैं—

मनस्तनुवचःकर्मयोग इत्यभिधीयते ।
स एवास्रव इत्युक्तस्तत्त्वज्ञानविशारदैः ॥ १ ॥

भावार्थ—मन काय वचन इनका कर्म कहिये क्रिया सो योग ऐसा कहिये है. बहुरि सो योग है सो ही आस्रव है. ऐसें जे तत्त्वज्ञानविषै प्रवीण हैं तिनिनै कह्या है **भावार्थ**—यह स्वरूप तत्त्वार्थ सूत्रमें कह्या है ॥

वार्द्धेरन्तः समादत्ते यानपात्रं यथा जलम् ।
छिद्रैर्जीवस्तथा कर्म योगरन्ध्रैः शुभाशुभैः ॥ २ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भावार्थ—जैसैं समुद्रकेमध्य जिहाज है सो छिद्रनिकरि जलकूं ग्रहण करै है, तैसैं जीव है सो योगरूप छिद्रनिकरि कर्मकूं ग्रहण करै है. कैसे हैं योग? शुभ अशुभ भेदकरि दोय प्रकार हैं ॥

यमप्रशमनिर्वेदतत्त्वचिन्तावलम्बितम् ।
मैत्र्यादिभावनारूढं मनः सूते शुभास्रवं ॥ ३ ॥

भावार्थ—यम कहिये अणुव्रत महाव्रत, प्रशम कहिये कषाययनिकी मंदता निर्वेद कहिये संसारसों वैराग्य तथा धर्मानुराग अर तत्त्वनिका चिन्तवन इनिका आलम्बनयुक्त मन होय तथा मैत्री प्रमोद करुणाभाव मध्यस्थभाव ए मनविषै भावना होय ऐसा मन है सो तो शुभास्रवकूं उपजावै है ॥

कषायदहनोद्दीप्तं विषयैर्व्याकुलीकृतम्
संचिनोति मनः कर्म जन्मसंबन्धसूचकम्॥ ४ ॥

भावार्थ—कषायरूप अग्निकरि प्रज्वलित अर इंद्रियनिके विषयनिकरि व्याकुल ऐसा मन है सो संसारके संबन्धका सूचक अशुभ कर्मका संचय करै है ॥

विश्वव्यापारनिर्मुक्तं श्रुतज्ञानावलम्बितम् ।
शुभास्रवाय विज्ञेयं वचः सत्यप्रतिष्ठितम् ॥ ५ ॥

भावार्थ—समस्त अन्यव्यापारकरि रहित अर श्रुतज्ञानका अवलम्बनयुक्त अर सत्यरूप प्रतिष्ठावान् जाकूं कोई निंदै नहीं ऐसा वचन है सो शुभास्रवकेअर्थि होय है ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपवादास्पदीभूतमसन्मार्गोपदेशकम् ।
पापास्रवाय विज्ञेयमसत्यं परुषं वचः ॥ ६ ॥

भाषार्थ—अपवाद निंदाका तौ ठिकाणा अर मिथ्यामार्गका उपदेश करणेवाला अर असत्य अर कठोर काननितैं सुणते ही परकै कषाय उपजै तथा परका जाकरि बुरा होय ऐसा वचन है सो अशुभ आस्रवके अर्थि जानना ॥

सुगुप्तेन स्वकायेन कायोत्सर्गेण वानिशम् ।
संचिनोति शुभं कर्म काययोगेन संयमी ॥ ७ ॥

भाषार्थ—सम्यक्प्रकार गुप्तिरूप किया अपने वश कीया जो काय ताकरि, अथवा निशादिन कायोत्सर्गकरि संयमी मुनि है सो ऐसे काययोगकरि शुभकर्म संचै है ॥

सततारम्भयोगैश्च व्यापारैर्जन्तुघातकैः ।
शरीरं पापकर्माणि संयोजयति देहिनाम् ॥ ८ ॥

भाषार्थ—निरन्तर आरंभके हैं योग जिनिमें बहुरि जीवनिके घात करनेवाले ऐसे व्यापारनिकरि यह शरीर है सो प्राणीनिके पापकर्म जो अशुभकर्म तिनहि जोडै है. यह काययोगकरि अशुभ आस्रव कह्या ॥

अब आस्रवका व्याख्यान पूरा करै हैं, तहाँ सामान्यकरि कहै हैं,—

शिखरिणी छन्दः

कषायाः क्रोधाद्याः स्मरसहचराः पञ्चविषयाः
प्रमादा मिथ्यात्वं वचनमनसी काय इति च ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दुरन्ते दुर्ध्याने विरतिविरहश्चेति नियतम्
स्रवन्त्येते पुंसां दुरितपटलं जन्मभयदम् ॥ ९ ॥

भावार्थ—या संसारविषै पुरुषनिकै एते परिणाम संसारके भय देनेवाला पापका समूहकूं आस्रवस्वरूप करै हैं. ते कोन ? प्रथम तो मिथ्यात परिणाम, बहुरि क्रोधकूं आदिदे कषाय, बहुरि कामके सहचर ऐसे पंचइन्द्रियनिके विषयभोगनेके परिणाम, बहुरि प्रमाद विकथादिक, बहुरि मनवचनकायके योग, बहुरि व्रतरहित अविरत परिणाम बहुरि आर्तरौद्र अशुभ ध्यान, एते परिणाम नियमतैं पापास्रवकूं करैं हैं इनि परिणामनिका विशेषस्वरूप तत्त्वार्थसूत्रकी टीकातैं जानना ऐसें आस्रवभावनाका कथन कीया ॥

याका संक्षेप ऐसा जो यह आत्मा शुद्धनयकी दृष्टिमें तौ आस्रवतैं रहित केवलज्ञानस्वरूप है तथापि अनादिकर्मसंबन्धतैं मिथ्यात्व आदि परिणामरूप परिणमै है. यातैं नवीन कर्म आस्रव करै है. तातैं तिनि मिथ्यात्व आदि परिणामनितैं निवृत्तिकरि अपने स्वरूपका ध्यान करै तब आस्रवनितैं रहित होय मुक्त होय. यह आस्रवके कथनका आशय है ॥

दोहा ।

आतम केवल ज्ञानमय, निश्चयदृष्टिनिहारि ।
सब विभाव परिणाममय, आस्रवभाव विडारि ॥ ७ ॥

इति आस्रवानुप्रेक्षा ॥ ७ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ संवरानुप्रेक्षा लिख्यते ।

आगें संवरभावनाका व्याख्यान करै हैं. तहां संवरका स्वरूप कहै हैं,—

सर्वास्रवनिरोधो यः संवरः स प्रकीर्तितः ।
द्रव्यभावविभेदेन स द्विधा भिद्यते पुनः ॥ १ ॥

भाषार्थ—जो सर्व आस्रवनिका निरोध सो संवर कह्या है. ऐसें तो सामान्यकरि एक ही प्रकार है. बहुरि सो ही संवर द्रव्यभावके भेदकरि दोयप्रकार भेदरूप कीजिये हैं ॥

अब दोय भेदनिका स्वरूप कहै हैं,—

यः कर्मपुद्गलादानविच्छेदः स्यात्तपस्विनः ।
स द्रव्यसंवरः प्रोक्तो ध्याननिर्धूतकल्मषैः ॥ २ ॥

भाषार्थ—जो तपस्वी मुनिनिकै कर्मरूप पुद्गलनिका ग्रहणका विच्छेद होय सो द्रव्यसंवर है ऐसें ध्यानकरि उडाये हैं पाप जिनिनै ऐसें मुनिनिनै कह्या हैं ॥

या संसारनिमित्तस्य क्रिया या विरतिः स्फुटं ।
स भावसंवरस्तज्ज्ञैर्विज्ञेयः परमागमात् ॥ ३ ॥

भाषार्थ—जो संसारका कारण कर्मका ग्रहण, ताकी क्रियाकी विरति कहिये अभाव, सो प्रगट भावसंवर है. ऐसें तिस संवरके ज्ञातानिकरि परमागमतैं जानने योग्य है ॥

असंयममयैर्बाणैः संवृतात्मा न भिद्यते ।
यमी यथा सुसंनद्धो वीरः समरसंकटे ॥ ४ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषार्थ—संयमी मुनि है सो संसारनिमित्त कियातैं विरतिरूप संवरयुक्त है आत्मा जाका ऐसा भया सन्ता असंयममयी वाणनिकरि भेद्या न जाय है. जैसैं संग्रामके संघट्टमैं भलेप्रकार सज्या सुभट है सो वाणनिकरि भेद्या न जाय तैसैं जानना ॥

अब आस्रवनिके रोकनेका विधान कहै हैं,—

जायते यस्य यः साध्यः स तेनैव निरुध्यते ।
अप्रमत्तैः समुद्युक्तैः संवरार्थं महर्षिभिः ॥ ५ ॥

भाषार्थ—प्रमादरहित अर संवरके अर्थि उद्यमी ऐसे महामुनिनिकरि जो जाकै साध्य होय है ताहीकरि सो रोकिये है. **भावार्थ**—जाकरि आस्रव होय ताका प्रतिपक्षी भावकरि सो रोकिये सो ही आगें कहै हैं,—

क्षमा क्रोधस्य मानस्य मार्दवत्वार्जवं पुनः ।
मायाया संगसंन्यासो लोभस्यैते द्विपः क्रमात् ॥ ६ ॥

भाषार्थ—क्रोध कषायका तौ क्षमा शत्रु है. बहुरि मानकषायका मृदुभाव-कोमलपणा शत्रु है. बहुरि मायाकषायका ऋजुभाव-सरलभाव शत्रु है. बहुरि लोभकषायका परिग्रहका त्याग शत्रु है. ए अनुक्रमतैं जानने ॥

रागद्वेषौ समत्वेन निर्ममत्वेन वानिशम् ।
मिथ्यात्वं दृष्टियोगेन निराकुर्वन्ति योगिनः ॥ ७ ॥

भाषार्थ—योगी ध्यानी मुनि हैं ते रागद्वेषकूं तो निरन्तर समभावकरि निराकरण करै हैं अथवा निर्ममत्वकरि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निराकरण करै हैं. बहुरि मिथ्याभावकूं निर्ममत्त्वकरि अर सम्यग्दर्शनके योगकरि निराकरण करै हैं ॥

अविद्याप्रसरोद्भूतं तमस्तत्त्वावरोधकम् ।
ज्ञानसूर्यांशुभिर्वाढं स्फेटयन्त्यात्मदर्शिनः ॥८॥

भाषार्थ—आत्माके देखनेवाले मुनि हैं ते अविद्याका फैलावकरि उपज्या अर तत्त्वज्ञानका रोकनेवाला ऐसा अज्ञानरूप अंधकारकूं ज्ञानरूप सूर्यके किरणनिकरि अतिशयकरि दूरि करै हैं ॥

असंयमगरोद्गारं सत्संयमसुधाम्बुभिः ।
निराकरोति निःशङ्कं संयमी संवरोद्यतः ॥ ९॥

भाषार्थ—संवरकैविषै उद्यमी संयमी पुरुष हैं सो असंयमरूप जहरका उद्गार है ताहि सम्यक्संयमरूपी अमृतमयी जलनिकरि दूरि करै हैं यामें संशय नाहीं ॥

द्वारपालीव यस्योच्चैर्विचारचतुरा मतिः ।
हृदि स्फुरति तस्याघसूतिः स्वप्नेऽपि दुर्घटा ॥१०॥

भाषार्थ—जा पुरुषकै अतिशयकरि विचारके विषै चतुर ऐसी बुद्धि हृदयविषै स्फुरायमान है ताके हृदयविषै पापकी उत्पत्ति स्वप्नविषै भी दुर्घट है. नाहीं प्रवर्त्तै है. कैसी है बुद्धि द्वारपालीकी ज्यों है. जैसैं द्वारै चतुर स्त्री तिष्टै सो मंदिरमैं मलिनकूं प्रवेश नाहीं करने दे, तैसैं यह बुद्धि पापकूं प्रवेश न करनै दे है ॥

अब संक्षेप करि कहै हैं,—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विहाय कल्पनाजालं स्वरूपे निश्चलं मनः ।
यदा धत्ते तदैवस्यान्मुनेः परमसंवरः ॥ ११ ॥

भावार्थ—जिसकाल सर्वकल्पनाका जालकूं छोडि अपने स्वरूपकेविषै मनकूं निश्चित थांभै तिसही काल मुनिकै परम संवर होय है ॥

आगैं संवरका कथन पूर्ण करै हैं. तहां संवरकी महिमा करै हैं,

मालिनी छन्द ।

सकलसमितिमूलः संयमोद्दामकाण्डः
प्रशमविपुलशाखो धर्मपुष्पावकीर्णः ।
अविकलफलबन्धैर्बन्धुरो भावनाभि-
र्जयति जितविपक्षः संवरोद्दामवृक्षः ॥ १२ ॥

भावार्थ—यह संवररूप उत्कृष्ट वृक्ष है सो सर्वोत्कर्ष करि वर्तै है कैसा है? ईर्यासमितिकूं आदि पांचसमिति सो है मूल जाकै. बहुरि सामायिक आदि संयम सो ही है स्कन्ध जाकै, बहुरि प्रशम कहिये विशुद्ध भाव सो ही है विस्तीर्ण शाखा जाकै, बहुरि उत्तम क्षमादिक धर्म, सो ही भये फूल, तिनिकरि व्याप्त है. बहुरि बारह भावना तिनिकरि बंधुर है सुंदर है. कैसी है भावना ? अविकल है फलका बंध जिनितैं. जैसैं फलके वीट गाढा होय तौ फलकूं पड़ने न दे, तैसैं भावनाका भावना है सो संवरके फलकूं दृढ करै है । ऐसैं संवरभावनाका व्याख्यान किया ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

याका संक्षेप ऐसा जो यह आत्मा अनादितैं अपने स्वरूपकूं भूलि रह्या है यातैं आस्रवभावकरि कर्मनिकूं बांधै है अर जब अपना स्वरूपकूं जानि तिसमें लीन होय तब संवररूप होय आगामी कर्मनिकूं न बांधै, तब पूर्वबंधकी निर्जरा करि मोक्ष प्राप्त होय ताके बाह्यसाधन समिति गुप्ति धर्म अनुप्रेक्षा परीसहजय चारित्र कहे हैं. तिनिका विशेष कथन तत्त्वार्थसूत्रकी टीकातैं जानना ॥

दोहा.

निज स्वरूपमें लीनता, निश्चयसंवर जानि।
समिति गुप्ति संयमधरम, धरे पापकी हानि ॥८॥

इति संवरानुप्रेक्षा ॥८॥

अथ निर्जारनुप्रेक्षा लिख्यते ।

आगें निर्जरा भावनाका व्याख्यान करै हैं तहां निर्जराका स्वरूप तथा जिनिकै यह होय तिनिकूं कहै हैं,—

यया कर्माणि शीर्यन्ते बीजभूतानि जन्मनः
प्रणीता यमिभिः सेयं निर्जरा जीर्णबन्धनैः ॥१॥

भाषार्थ—जाकरिसंसारके बीजभूत जे कर्म ते गलैं झडैं सो निजरा संयमी मुनिनिनै कही हैं कैसे हैं ते मुनि? जीर्ण भये हैं कर्मके बन्धन जिनिके ऐसे हैं ॥

सकामाकामभेदेन द्विधा सा स्याच्छरीरिणाम् ।
निर्जरायमिनां पूर्वा ततोऽन्या सर्वदेहिनाम् ॥२॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषार्थ—यह निर्जरा है सो सकाम अर अकाम भेदकरि देहधारीनिकै दोयप्रकार है तामैं पूर्वा कहिये पहली सकाम निजरा है सो तो संयमी मुनिनिकै होय है बहुरि दूसरी अकाम है सो सर्व प्राणीनिकै होय है. विना तपश्चरणादिकके स्वयमेव निरंतर कर्म उदय रस देय क्षरै है ।

पाकः स्वमनुपायाच्च स्यात्फलानां तरोर्यथा ।
तथात्रकर्मणां ज्ञेया स्वयं स्वोपायलक्षणा ॥३॥

भाषार्थ—या लोकविषै जैसैं वृक्षनिके फलनिका पकना है सो स्वयमेव आपहीतैं भी होय है और उपाय जो पालमैं देना तिसतैं भी होय है. तैसैं ही कर्मनिका पाक (पचना)होय है. अपने आप ही स्थितिपूरी भये पकि खिर जाय है तथा उपाय जो सम्यग्दर्शनादिसहित तपश्चरणतैं भी पकि क्षरै है. ऐसैं स्वयं और सोपायस्वरूप दोयप्रकार पचना जानना ॥

विशुद्धयति हुताशेन सदोषमपि काञ्चनम् ।
यद्वत्तथैव जीवोऽयं तप्यमानस्तपोऽग्निना ॥ ४ ॥

भाषार्थ—सुवर्ण है सौ अग्निकरि तपाया हुवा विशुद्ध होय है दोष सहित होय तौ भी ताका दोषनिकसिजाय है तैसैं ही यह जीव है, सो भी दोषनिकरि सहित है सो भी तपरूप अग्निकरि तपाया हूवा विशुद्ध होय जाय है॥

चमत्कारकरं धीरैर्बाह्यमाध्यात्मिकं तपः ।
तप्यते जन्मसन्तानशङ्कितैरार्यसूरिभिः ॥५॥

भाषार्थ—ऐसैं पूर्वोक्त निर्जराका कारण तपकूं जाणि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अर बडे महंत आचार्य मुनि हैं तिनिकरि चमत्कारका करनेवाला बाह्य अर अन्तरंग स्वरूप तप है सो तपिये है. कैसे हैं आचार्य? तप करनेकूं धीरवीर हैं समर्थ हैं. बहुरि कैसे हैं? संसारका सन्तान परिपाटी आगामी होनेकी शंकाकरियुक्त है. यह बिचारै है जो अबतांई संसारके दुःख सहे अब तपकरि कर्मकी निर्जराकरि संसारकी परिपाटीका अभाव करैंगे. यह विचार दोऊ प्रकारके तपकूं समर्थ होय करै हैं ॥

तत्र बाह्यं तपःप्रोक्तमुपवासादि षड्विधम् ।
प्रायश्चित्तादिभिर्भेदैरन्तरङ्गं च षड्विधम् ॥ ६ ॥

भाषार्थ—तिसतपविषै बाह्य तप है सो तो उपवासादिक भेदकरि छहभेदरूप कह्या है. ते—अनशन अवमोदर्य वृत्तिपरिसंख्यान रसपरित्याग विविक्तसय्यासन कायक्लेश ऐसैं छह भेद हैं. बहुरि अन्तरंग तप है सो प्रायश्चित आदि भेदनिकरि छह प्रकार हैं—ते प्रायश्चित विनय वैयावृत्त्य स्वाध्याय व्युत्सर्ग ध्यान ऐसैं छह भेद हैं. तिनिका स्वरूप विशेषकरि तत्त्वार्थसूत्रकी टीकातैं जानना ॥

निर्वेदपदवीं प्राप्य तपस्यति यथा यथा ।
यमी क्षपति कर्माणि दुर्जयाणि तथा तथा ॥७॥

भाषार्थ—संयमी मुनि है सो वैराग्य पदवीकूं प्राप्त होय करि जैसैं २ तप करै है तैसैं कर्म २ दुर्जय हैं तोऊ तिनिकूं क्षय करै है. ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ध्यानानलसमालीढमप्यनादिसमुद्भवम् ।
सद्यः प्रक्षीयते कर्म शुद्ध्यत्यङ्गी सुवर्णवत् ॥ ८ ॥

भाषार्थ—कर्म है सो अनादिकालतैं उपज्या है तोऊ ध्यानरूप अग्निकरि स्पर्श्या हूवा तत्काल क्षय होय है. ताके क्षय होतै जैसैं अग्निकरि सुवर्ण शुद्ध होय है तैसैं प्राणी तपकरि कर्मका नाश भये शुद्ध होय है।

अब निर्जराका कथन पूर्ण करै हैं सो सामान्यकरि कहै हैं,—

स्रग्धराछन्दः ।

तपस्तावद्बाह्यं चरति सुकृती पुण्यचरित-
स्ततश्चात्माधीनं नियतविषयं ध्यानपरमं ।
क्षपत्यन्तर्लीनं चिरतरचितं कर्मपटलम्
ततो ज्ञानाम्भोधिं विशति परमानादनिलयं ॥९॥

भाषार्थ—पवित्र है आचरण जाकै ऐसा सुकृति सत्पुरुष है सो प्रथम तौ बाह्यका तप है अनशनादिक ताहि आचरै है ता पीछैं आत्माधीन अंतरंग तप है ताहि आचरै है. तिसमैं नियत है विषय जाका ऐसा ध्यान नामा तप है सो उत्कृष्ट है ताहि आचरै है. तिस तपतैं घणें कालका संचयरूप भया जो अन्तरंगविषै कर्मका पटल ताहि क्षेपै है क्षय करै है. घातिकर्मका नाश करै है. ता पीछें ज्ञानरूप समुद्रविषै प्रवेश करै है कैसा है ज्ञानसमुद्र ? परम आनंद अतीन्द्रिय जो सुख ताका निवास है। ऐसैं निर्जरा भावनका कथन पूर्ण कीया ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

याका संक्षेप ऐसा जो आत्माकै कर्मका संबंध अनादि कालतैं है. तहां यह आत्मा कालादि लब्धिका निमित्त पाय अपना स्वरूप संभारै अर तपश्चरणकरि ध्यानमें लीन होय तब संवररूप होय. आगामी कर्म न बांधै अर पूर्वकर्म आपै-आप निर्जरारूप होय तब मोक्ष पावै ॥

दोहा.

संवरमय ह्वै आतमा, पूर्वकर्म झडि जायं ।
निजस्वरूपकूं पायकरि, लोकशिखर तब थाय ॥९॥

इति निर्जरानुप्रेक्षा ॥ ९ ॥

अथ धर्मानुप्रेक्षा लिख्यते ।

आगें धर्मभावनाका व्याख्यान करै हैं,—

पवित्री क्रियते येन येनैवोद्ध्रियते जगत् ।
नमस्तस्मै दयार्द्राय धर्मकल्पांह्रिपाय वै ॥ १ ॥

भाषार्थ—जिस धर्मकरि जगत पवित्र कीजिये अर जिसहीकरि उद्धारिये तिस धर्मरूप कल्पवृक्षकेअर्थि नमस्कार होहु, कैसा है धर्मरूप कल्पवृक्ष? दयाकरि आर्द्रित है. डह डहा है. ऐसैं धर्मकी बडाई करि आचार्यने नमस्कार किया है ॥

दशलक्ष्मयुतः सोऽयं जिनैर्धर्मः प्रकीर्तितः ।
यस्यांशमपि संसेव्य विन्दन्ति यमिनः शिवम् ॥२॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषार्थ—सो यह धर्म जिनेन्द्र भगवाननें दशलक्षणयुक्त कह्या है. कैसा है जाका अंशकूं भी सेयकारि संयमी मुनि मुक्ति पावै है ॥

न सम्यग्गदितुं शक्यं यत्स्वरूपं कुदृष्टिभिः ।
हिंसाक्षपोषकैः शास्त्रैरतस्तैस्तन्निगद्यते ॥ ३ ॥

भाषार्थ—जिस धर्मका स्वरूप मिथ्यादृष्टीनिकरि हिंसा अर इन्द्रियनिके पोषनेवाले शास्त्रनिकरि कहनेकूं समर्थ न हूजिये है. तातैं याका स्वरूप यथार्थ हम कहै हैं ॥

चिन्तामणिर्निधिर्दिव्यः स्वर्धेनुकल्पपादपाः ।
धर्मस्यैते श्रिया सार्द्धं मन्ये भृत्याश्चिरन्तनाः॥४॥

भाषार्थ—चिन्तामणि दिव्य नवनिधि कामधेनु कल्पवृक्ष ए सर्व लक्ष्मीकरि सहित धर्मके बहुत कालतैं किंकर हैं आचार्य कहै हैं मैं ऐसें मानूं हौं ॥

धर्मो नरोरगाधीशनाकनायकवाञ्छितां ।
अपि लोकत्रयीपूज्यां श्रियं दत्ते शरीरणाम्॥५॥

भाषार्थ—धर्म है सो चक्रवर्ति धरणीन्द्र देवेन्द्रकरि वांछित अर तीनलोककरि पूज्य ऐसी जो तीर्थंकरकी लक्ष्मी ताहि प्राणीनिकूं दे है ॥

धर्मो व्यसनसम्पाते पाति विश्वं चराचरम् ।
सुखामृतपयःपूरैः प्रीणयत्यखिलं जगत् ॥ ६ ॥

भाषार्थ—धर्म है सो कष्टके संपातविषै समस्त

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्रस थावर जीवनिकूं राखै है रक्षा करै है. बहुरि सुखरूप अमृत जलके प्रवाहकरि समस्त जगतकूं तृप्ति करै है ॥

पर्यन्यपवनार्केन्दुधराम्बुधिपुरन्दराः ।
अमी विश्वोपकारेषु वर्त्तन्ते धर्मरक्षिताः ॥ ७ ॥

भाषार्थ–मेघ पवन सूर्य चन्द्रमा पृथिवी समुद्र इन्द्र ए सर्व पदार्थ हैं ते जगतके उपकारविषै प्रवर्त्तै है ते धर्मके राखे हुये प्रवर्त्तै है धर्म विना ये उपकारी नाहीं होय है ॥

मन्येऽसौ लोकपालानां व्याजेनाव्याहतक्रमः ।
जीवलोकोपकारार्थं धर्म एव विजृम्भितः ॥८॥

भाषार्थ–आचार्य कहै हैं जो मैं ऐसैं मानू हूं जो ए इन्द्रादिक लोकपाल अथवा राजादिक हैं तिनिका मिस करि लोकनिके उपकारकै अर्थि धर्म ही विस्तस्या है. कैसा है धर्म? अव्याहत है क्रम कहिये व्यापार रूप प्रवर्त्तना जाकी, याका किया उपकार कोऊ मेटि सकै नाहीं है ॥

न तत्रिजगतीमध्ये भुक्तिमुक्त्योर्निवन्धनम् ।
प्राप्यते धर्मसामर्थ्यान्नयद्यमितमानसैः ॥९॥

भाषार्थ—इस तीन जगतकै मध्य भोग अर मोक्षका कारण ऐसा कोऊ नाहीं है जो धर्मकूं प्राप्त है मन जिनिका ऐसे पुरुषनिकरि धर्मकी सामर्थ्यतैं न पाइये है, या धर्मकी सामर्थ्यतैं सर्वमनोवांछित पाइये है ॥

नमन्ति पादराजीवराजिकां नतमौलयः ।
धर्मैकशरणीभूतचेतसां त्रिदिशेश्वराः ॥१०॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषार्थ—धर्म ही एक शरणीभूत है ऐसा है चित्त-जिनिका तिनिके चरण कमलनिकी पंक्तिकूं देवनिके इन्द्र हैं ते नमस्कार करै हैं. कैसे भये? नमे हैं मस्तक जिनिके ऐसे भये सन्ते । **भावार्थ**—धर्मके माहात्म्यतैं तीर्थंकर पदवी पावै तिनिकूं इन्द्र भी आय नमै है ॥

धर्मो गुरुश्च मित्रं च धर्मः स्वामी च बान्धवः ।
अनाथवत्सलः सोऽयं स त्राता कारणं विना ॥११॥

भाषार्थ—धर्म है सो गुरु है बहुरि मित्र भी धर्म ही है स्वामी भी धर्म ही है बहुरि बान्धव हितू भी धर्म ही है. बहुरि अनाथ जाका कोई स्वामी नाहीं ताका वत्सल प्रीतितैं रक्षा करनेवाला स्वामी भी धर्म ही है. बहुरि सो यह धर्म ही विनाकारण रक्षा करनेवाला है या प्राणीकूं अन्य शरणा वृथा है ॥

धत्ते नरकपाताले निमज्जज्जगतां त्रयं ।
यो जयत्यापि धर्मोऽयं सौख्यमत्यक्षमङ्गिनां ॥१२॥

भाषार्थ—यह धर्म है सो नरकके तलैं पाताल निगोद है ताविषै डूबता जो जगतका त्रिक–तीन लोकके प्राणी तिनिकूं धत्ते कहिये धारण करै है पड़तेकूं आधार होय है। बहुरि केवल धारै ही नाहीं है प्राणीनिकूं अतीन्द्रियसुखयुक्त भी करै है धर्म ऐसा है ॥

नरकान्धमहाकूपे पतितां प्राणिनां स्वयम् ।
धर्म एव स्वसामर्थ्याद्दत्ते हस्तावलम्बनम् ॥१३॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषार्थ—बहुरि यह धर्म है सो ही प्राणीनिकूं नरकरूप महाअन्धकूपविषै आपै आप पड़तेनिकूं अपनी सामर्थ्यतैं हस्तावलम्बन दे है पड़तेनिकूं थांभै है ॥

महातिशयसंपूर्णं कल्याणोद्दाममन्दिरम् ।
धर्मो ददाति निर्विघ्नं श्रीमत्सर्वज्ञवैभवम् ॥१४॥

भाषार्थ—धर्म है सो महान् अतिशयनिकरि पूर्ण अर कल्याणनिका उत्कट निवास ऐसी लक्ष्मीकरि सहित सर्वज्ञका विभव निर्विघ्नपणै दे है । तीर्थंकरकी पदवी दे है ॥

याति सार्धं तथा पाति करोति नियतं हितं ।
जन्मपङ्कात्समुद्धृत्य स्थापयत्यमले पथि ॥१५॥

भाषार्थ—धर्म है सो प्राणीकै परलोकविषै साथि जाय है तथा रक्षा करै है. तथा नियमकरि हित ही करै है । बहुरि संसाररूप कर्दमतैं काढि निर्मल मार्ग जो शुद्ध मोक्षमार्ग ताविषै स्थापै है ॥

न धर्मसदृशः कश्चित्सर्वाभ्युदयसाधकः ।
आनन्दकुजकन्दश्च हितः पूज्यः शिवप्रदः ॥१६॥

भाषार्थ—या जगतविषै धर्मसारिखा अन्य कोई सर्व अभ्युदयका साधक नाहीं है मनोवांछित सम्पदाका देनेवाला यह ही है । कैसा है आनंदरूप वृक्षका तौ कन्द है आनंदके अंकूरे इसहीतैं उपजै हैं बहुरि हितरूप अर पूजनीक अर मोक्षका दाता यह धर्म ही है अन्य नाहीं है ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्यालानलनरव्याघ्रद्विपशार्दूलराक्षसाः ।
नृपादयोऽपि द्रुह्यन्ति न धर्माधिष्ठितात्मने ॥१७॥

भाषार्थ—जो धर्मकरि अधिष्टित आत्मा है ताकै निमित्त सर्प अग्नि मनुष्य बघेरा हस्ती सिंह राक्षस ए सर्व बहुरि राजादिक ते सर्वही द्रोह न करै है. यह धर्म सर्वतैं रक्षा करै है. अथवा ते सर्व धर्मात्माके रक्षक होय हैं ॥

निःशेषं धर्मसामर्थ्यं न सम्यग्वक्तुमीश्वरः ।
स्फुरद्वक्त्रसहस्रेण भुजगेशोऽपि भूतले ॥ १८ ॥

भाषार्थ—आचार्य कहै हैं जो इस धर्मका सामर्थ्य सम्पूर्ण सम्यक्प्रकार कहनेकूं भुजगेश जो शेषधरणीन्द्र सो भी स्फुरायमान हजार मुखकरि या भूतलविषै समर्थ नाहीं सो हम कैसैं समर्थ हों हिं ॥

धर्मधर्मेति जल्पन्ति तत्त्वशून्याः कुदृष्टयः ।
वस्तुतत्त्वं न बुध्यन्ते तत्परीक्षाक्षमो यतः ॥ १९ ॥

भाषार्थ—जे तत्त्वके यथार्थ ज्ञानकरि शून्य हैं, ऐसे मिथ्या दृष्टि हैं ते धर्म धर्म ऐसैं तो कहै हैं परन्तु वस्तुका यथार्थ स्वरूपकूं नाहीं जानै हैं. जातैं ते तिस धर्मकी परीक्षाकेविषै असमर्थ हैं. **भावार्थ**---नाम मात्र तथा विपरीतरूप धर्म धर्म ऐसा तौं कहै हैं परन्तु वस्तुका स्वरूप यथार्थ जाने विना सांची परीक्षा कैसैं होय ? नाहीं होय. यह परीक्षा जिनागमतैं ही होय है तहां जिनागममैं धर्म कह्या है सो कहै हैं,—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तितिक्षामार्दवं शौचमार्जवं सत्यसंयमौ ।
ब्रह्मचर्यं तपस्त्यागाकिञ्चन्यं धर्म उच्यते ॥२०॥

भाषार्थ—क्षमा मार्दव शौच आर्जव सत्य संयम ब्रह्मचर्य तप त्याग आकिंचन्य ए दशप्रकार धर्म है इनिका स्वरूप विशेष तत्त्वार्थ सूत्रकी टीकातैं जानना ॥

आर्याछन्दः ।

यद्यत्स्वस्यानिष्टं तत्तद्वाक्चित्तवृत्तिभिः कार्यं ।
स्वप्नेऽपि नापरेषामिति धर्मस्याग्रिमं लिङ्गम्॥२१॥

भाषार्थ—धर्मका मुख्य प्रधान चिह्न यह है कि जो जो आपकै अनिष्ट है आपकूं बुरा लागै है सो सो परकै वचन मन कायकी क्रियाकरि सुपनेविषै भी न करना ॥

अब धर्मभावनाके कथनकूं पूर्ण करै हैं तहां समान्यकरि कहै हैं,—

शार्दूलविक्रिडित छन्दः ।

धर्मः शर्मभुजङ्गपुङ्गवपुरीसारं विधातुं क्षमो
धर्मः प्रापितमर्त्यलोकविपुलप्रीतिस्तदाशंसिनं ।
धर्मः स्वर्नगरीनिरन्तरसुखास्वादोदयस्यास्पदम्
धर्मः किं न करोति मुक्तिललनासंभोगयोग्यं जनम् २२

भाषार्थ—यह धर्म है सो धर्मात्मा पुरुषनिकै धरणीन्द्रिकी पुरीका सार सुखकूं करनेकूं समर्थ है. बहुरि धर्म है सो तिस धर्मके बांछक अर पालनेवाले पुरुषनिकूं प्राप्तकरी है मनुष्यलोकविषै विस्तीर्ण बडी प्रीति जानै ऐसा है. बहुरि धर्म

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

है सो स्वर्गपुरीका निरन्तर सुखका उदय ताका ठिकाणा या जनकूं करै है बहुरि धर्म है सो धर्मात्मा जनकूं मुक्तिरूप स्त्रीका संभोगकै योग्य करै है. धर्म ऐसा है ॥

मालिनीछन्दः ।

यदि नरकनिपातस्त्यक्तु मत्यन्तमिष्टं-
स्त्रिदशपतिमहर्द्धिं प्राप्तुमेकान्ततो वा ।
यदि चरमपुमर्थः प्रार्थनीयस्तदानीम्
किमपरमभिधेयं नाम धर्मं विधत्तः ॥ २३ ॥

भाषार्थ—हे आत्मन् ! जो तेरै नरकका निपात पडना छोडना अत्यन्त इष्ट है अथवा इन्द्रका महान् विभव पावना एकान्त थकी इष्ट है बहुरि तेरै चरम पुमर्थ जो च्यारपुरुषार्थमैं अन्तका पुरुषार्थ मोक्ष प्रार्थना करने योग्य है तो अवर कहा कहने योग्य है. तू एक धर्म ही कूं करि, या धर्म तैं सर्व अनिष्ट तो दूरि होय है अर सर्व इष्ट की प्राप्ति होय है. ऐसैं धर्मभावनाका व्याख्यान किया ।

याका संक्षेप ऐसा जो धर्म जिनागममें च्यारि प्रकार वर्णन किया है, वस्तुस्वभाव, क्षमादि दशप्रकार, रत्नत्रय सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्र, अर दयामय सो निश्चय व्यवहारनयकर साध्या हूवा एक स्वरूप अनेक स्वरूप सधै है. तहां इहां व्यवहारनयकूं प्रधानकर वर्णन किया है, सो धर्मका स्वरूप तथा महिमा तथा फल अनेकप्रकारकर वर्णन है. ताकूं विचार याकी भावना निरंतर राखनी. यह आशय है ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दोहा.

दरशज्ञानमय चेतना, आतमधर्म वखानि
दया क्षमादिक रतनत्रय, यामें गर्भित जानि ॥ १

इति धर्मानुप्रेक्षा ॥ १० ॥

अथ लोकानुप्रेक्षा लिख्यते.

आगैं लोक भावनाकूं कहै हैं तहां लोक स्वरूप कहै हैं.

यत्र भावा विलोक्यन्ते ज्ञानिभिश्चेतनेतराः ।
जीवादयः स लोकःस्यात्ततो लोकोनभःस्मृतः ॥ १॥

अर्थ—जहाँ जेते आकाशविषै जीवकूं आदिदेकर चेतन अर अचेतन पदार्थ ज्ञानीनिकर देखिये हैं सो लोक है. तातैं-परें एक आकाश है सो अलोक है।

वेष्टितः पवनैः प्रान्ते महावेगैर्महाबलैः ।
त्रिभिस्त्रिभुवनाकीर्णो लोकस्तालतरुस्थितिः ॥ २॥

भाषार्थ—यह लोक है सो अंताविषै सर्वतरफ महान है बेग जिनिका महानही है बल जिनिमैं ऐसे तीन पवन जे बात वलय तिनिकरि बेढ्या है. बहुरि तीन भुवन जे तिनिकरि व्याप्त है. बहुरि ताल वृक्षकी ज्यों है स्थिति जाकी नीचैंतैं पेड किछु चौड़ा बीचि सरल उपरि विस्ताररूप ऐसा आकार है ॥

निःपादितः स केनापि नैव नैवोद्धृतस्तथा ।
न भग्नः किं त्वनाधारो गगने स स्वयं स्थितः॥ ३॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषार्थ—सो प्रसिद्ध यह लोक काहूकरि निपजाया नाहीं है अनादिनिधन है. अन्यमती ब्रह्मादिकका निपजाया कहै हैं सो मिथ्या है. बहुरि काहुनै उद्धास्या थांम्या नाही है अन्यमती काछिवाकी पीठिपरि वा शेषनाग धास्या कहै है सो मिथ्या है. बहुरि ऐसी आशंका न करणी जो धास्या विना अधर कैसें है भग्न होय जाय जातैं आधार रहित है. तौ ऊ भग्न न होय है निराधार आकाशविषै स्वयमेव तिष्ट्या है ॥

अनादिनिधनः सोऽयं स्वयं सिद्धोऽप्यनश्वरः ।
अनीश्वरोऽपि जीवादिपदार्थैः संभृतोऽनिशम् ॥४॥

भाषार्थ—सो यह प्रसिद्ध लोक है सो अनादिनिधन है स्वयंसिद्ध है अविनाशी है याका कोई ईश्वर स्वामी नाहीं है तौ ऊ जीव आदि पदार्थनिकरि निरन्तर भस्या है. अन्यमती या लोककी अनेकप्रकार रचनाकी कल्पना करै है सो मिथ्या है ॥

अधोवेत्रासनाकारो मध्येस्याज्झल्लरीनिभः
मृदङ्गसदृशश्चाग्रे स्यादित्थं स त्रयात्मकः ॥५॥

भाषार्थ—यह लोक नीचैं तो वेत्रासन कहिये मूढेके आकार है नीचैं ही नीचैंतैं चौड़ा है पीछे उपरि घटता आया है बहुरि बीचि झालरिसारीखा है बहुरि उपरि मृदंग सारिखा है दोउतरफ सँकड़ा बीचि चौड़ा ऐसा आकार है. ऐसैं तीन स्वरूपकरि लोक तिष्टै है ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यत्रैते जन्तवः सर्वे नानागतिषु संस्थिताः ।
उत्पद्यन्ते विपद्यन्ते कर्मपाशवशङ्गताः ॥ ६ ॥

भाषार्थ—जिस लोकमें ए प्राणी हैं ते सर्व नानागतिनिविषै तिष्टे अपने कर्मरूप पाशके वशीभूत भये उपजै हैं मरैं हैं ॥

अब लोक भावनाका व्याख्यान पूर्ण करै हैं तहां सामान्य करि कहै हैं,—

मालिनी छन्दः ।

पवनवलयमध्ये संवृतोऽत्यन्तगाढं
स्थितिजननविनाशालिङ्गितैर्यस्तु जातैः ।
स्वयमिह परिपूर्णो नादिसिद्धः पुराणः
कृतिविलयविहीनः स्मर्यतामेष लोकः ॥ ७ ॥

भषार्थ—यहु लोक है सो ऐसा चितवो, कैसा? पवनके तीनबलय तिनिके मध्य है, सो पवननिकरि वेढ्या है सो अत्यन्त दृढ वेढ्या है इत उत चलै नाहीं है. बहुरि स्थिति जनन विनाश कहिये ध्रौव्य उत्पात विनाश इनिकरि युक्त जे वस्तुका समूह तिनिकरि स्वयमेव परिपूर्ण है बहुरि अनादि सिद्ध है, काहूनै नवीन न रच्या है याहीतैं पुराणा है. बहुरि उत्पत्ति अर प्रलयकरि रहित है. ऐसा लोककूं मनमें स्मरो एसा लोकभावनाका उपदेश है ॥ याप्रकार लोकभावनाका कथन पूर्ण किया. लोकका विशेष स्वरूप त्रिलोकसारादि ग्रन्थनितैं जानना ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

याका संक्षेप ऐसा जो यह लोक जीव आदि अनन्त द्रव्य निकी रचना है ते सर्व द्रव्य अपने अपने स्वभावकूं लिये न्यारे न्यारे तिष्टै हैं तिनिमैं आप आत्मद्रव्य है ताका स्वरूप यथार्थ जाणि अन्यसूं ममत निवारि आत्मभावना करणी. यह परमार्थ है. व्यवहारकरि सर्व द्रव्यनिका यथार्थ स्वरूप जानना यातैं मिथ्याश्रद्धान मिटै है ऐसैं लोकभावनाका चिंतवन करना ॥ ११ ॥

दोहा.

लोकस्वरूप विचारिकैं, आतमरूप निहारि।
परमार्थ व्यवहारमुणि मिथ्याभाव निवारि ॥ ११ ॥

इति लोकानुप्रेक्षा ॥ ११ ॥

अथ बोधिदुर्लभानुप्रेक्षा लिख्यते।

आगैं बोधिदुर्लभ भावनाका व्याख्यान करै हैं. तहां निगोद तैं लगाय सम्यग्ज्ञान पावनें ताईं उत्तरोत्तर पावना दुर्लभ कहै हैं,—

दुरन्तदुरितारातिपीड़ितस्य प्रतिक्षणम्।
कृच्छ्रान्नरकपातालतलाज्जीवस्य निर्गमः ॥ १ ॥

भाषार्थ—यह प्राणी संसारविषै दूरि है अंत जाका ऐसा पापरूप वैरीकरि निरन्तर पीडित है तहां प्रथम तो नरकतैं तलैं पातालमैं निगोद हैं तहां तैं या जीवका निकशना कहां होय? अर्थात् नित्य निगोदतैं निकसना कठिन है॥

१ सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्र इस रत्नत्रयको बोधि कहते हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तस्माद्यदि विनिष्क्रान्तः स्थावरेषु प्रजायते ।
त्रसत्वमथवाप्नोति प्राणी केनापि कर्मणा ॥ २ ॥

भाषार्थ—बहुरि तिस निगोदतैं जो निकसै तौ पृथिवी आदिकायनिविषै उपजै यह प्राणी कोई कर्मकरि त्रसपणाकूं बडा कष्टकरि पावै है ॥

पर्याप्तस्तथा संज्ञी पञ्चाक्षोऽवयवान्वितः ।
तिर्यञ्चोऽपि भवत्यङ्गी तन्न स्वल्पाशुभक्षयात्॥३॥

भाषार्थ—बहुरि त्रसपणा भी पावै तौ तहां तिर्यंच योनिनिविषै पर्याप्तपणा पावना थोड़ा अशुभका क्षयतैं नाहीं पावै है बहुत पापका क्षयतैं पावै है. तहां भी मनसहित पंचेन्द्रियपणा संज्ञीपणा पावना तैसैं ही दुर्लभ है. तहां भी सम्पूर्ण अवयव पावना दुर्लभ है ऐसैं यह प्राणी थोड़े पापके क्षयतैं नाहीं होय है ॥

नरत्वं यद्गुणोपेतं देशजात्यादिलक्षितम् ।
प्राणिनः प्राप्नुवन्त्यत्र तन्मन्ये कर्मलाघवात् ॥४॥

भाषार्थ—आचार्य कहै हैं ए प्राणी हैं ते या संसारमैं जो मनुष्यपणा अर तहां भी गुणनिकरि युक्त अर देश जाति कुल आदिकरि सहित उत्तरोत्तर कर्मके हलकापणाकरि पावै हैं. सो यह दुर्लभ है मैं ऐसैं मानूं हौं ॥

आयुः सर्वाक्षसागग्री बुद्धिः साध्वी प्रशान्तता ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भावार्थ—प्राणीनिकै देशजाति कुलादि सहित मनुष्यपणा भी होतैं बडी आयु पांचू इन्द्रियनिकी पूरी सामग्री बहुरि विशिष्ट भली बुद्धि परिणाम शीतल मंदकषायरूप होय है. सो काकतालीय न्याय सरीखा जानना। कोई समय तालका फल टूटि पृथ्वीपर पड़ै तिसही काल तहां काकका आगमन होय अर काक ताकूं भोगै यह जोग मिलना दुर्लभ है तैसैं जानना ॥

ततो निर्विषयं चेतो यमप्रशमवासितम् ।
यदि स्यात्पुण्ययोगेन न पुनस्तत्त्वनिश्चयः ॥ ६ ॥

भावार्थ—तिस पूर्वोक्त बुद्धि आदि सामग्रीतैं भी विषयनितैं विरक्तता अर व्रत सहित परिणाम अर प्रशम विशुद्ध भावकरि वासित चित्त होय सो बडे पुण्यकै योगकरि होय है बहुरि ऐसैं होतैं भी तत्त्वका निश्चय नाही होय है यह होना दुर्लभ है ॥

अत्यन्तदुर्लभेष्वेषु दैवाल्लब्धेष्वपि क्वचित् ।
प्रमादात्प्रच्यवन्तेऽत्र केचित्कामार्थलालसाः ॥७॥

भावार्थ—पूर्वोक्त सामग्री अत्यन्त दुर्लभ है ते भी दैवके योगतैं पावतै सन्तै कोई काम अर अर्थविषै लुब्ध भये सन्ते सम्यक्मार्गतैं च्युत होय हैं, विषय कषायनिमैं लगि जाय हैं ॥

मार्गमासाद्य केचिच्च सम्यग्रत्नत्रयात्मकम् ।
त्यजन्ति गुरुमिथ्यात्वविषव्यामूढचेतसः ॥ ८ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषार्थ—तहां भी केई रत्नत्रयात्मक मार्गकूं पायकरि भी तीव्र मिथ्यात्वरूप विषकरि व्यामूढचित भये सन्ते सम्यक् मार्गकूं छोडि दे हैं ॥

स्वयं नष्टो जनः कश्चित्कश्चिन्नष्टैश्च नाशितः ।
कश्चित्प्रच्यवते मार्गाच्चण्डपाषण्डशाशनैः ॥ ९ ॥

भाषार्थ—कोई जन तौ मार्गतैं आपही च्युत होय है बहुरि कोई जे अन्य, मार्गतैं च्युत भये होंय तिनिकरि नष्ट कीजिये हैं बहुरि कोई प्रचण्ड पाखंडीनिके उपदेशे मत तिनिकरि सम्यग्मार्गतैं च्युत होय हैं ॥

त्यक्त्वा विवेकमाणिक्यं सर्वाभिमतसिद्धिदम् ।
अविचारितरम्येषु पक्षेष्वज्ञः प्रवर्त्तते ॥ १० ॥

भाषार्थ—मार्गतैं च्युत भया जन है सो विवेकरूपी रत्न बांछित सिद्धिके देनेवाला चिन्तामणि सारिखाकूं छोडि करि अर विना विचारें रमणीकसे दीखैं ऐसे सर्वथा एकान्त पक्षनिविषै अज्ञानी प्रवर्तै है ॥

अविचारितरम्याणि शाशनान्यसतां जनैः ।
अधमान्यपि सेव्यन्ते जिह्वोपस्थादिदण्डितैः॥११॥

भाषार्थ—जे जिह्वा अर उपस्थादि इन्द्रियनिकरि दंडे जन हैं तिनिकरि दुर्जननिके शासन मत विना परीक्षा कीये रमणीक लागै ऐसे पापरूप मार्ग हैं तिनिकूं सेइये है । विषय कषाय कहा कहा अनर्थ न करावै ?

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुप्रापं न पुनर्पुंसां बोधिरत्नं भवार्णवे।
हस्ताद्भ्रष्टं यथा रत्नं महामूल्यं महार्णवे ॥ १ ॥

भाषार्थ—यह बोधिकहिये सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र रत्नत्रय है सो संसाररूप समुद्रविषै सुगम पावने स्वरूप नाहीं है याका पावना अत्यन्त दुर्लभ है. ताकूं पायकरि भी जे गमावै हैं ते जैसें हाथमैं आया अमोलिक रत्न बडे समुद्रमें गिर पडै तैसैं यह गये पीछैं फेरि पावना कठिन है।

अब या भावनाका कथन पूर्ण करै हैं तहां सामान्यकरि कहै हैं।

मालिनी छन्दः।

सुलभमिह समस्तं वस्तुजातं जगत्या-
सुरगसुरनरेन्द्रैः प्रार्थितं चाधिपत्यम्।
कुलबलसुभगत्वोद्दामरामादि चान्यत्
किमुत तादिदमेकं दुर्लभं बोधिरत्नम् ॥ १३ ॥

भाषार्थ—या जगती त्रिलोकीविषै समस्त वस्तुका समूह सो सुलभ है. बहुरि धरणीन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्रकरि प्रार्थना करनेयोग्य ऐसा अधिपतिपणा सो भी सुलभ ही है. जातैं यह भी कर्मके उदयकरि मिलै है. बहुरि भला-कुल बल सुभगता सुंदर स्त्री इत्यादि वस्तु सर्व ही सुलभ हैं तौ दुर्लभ कहा है जो प्रसिद्ध यह सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रस्वरूप बोधिरत्न है सो दुर्लभ है। ऐसैं बोधिदुर्लभ भावनाका वर्णन पूर्ण किया।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

याका संक्षेप ऐसा जो परमार्थकरि बिचारिये तब जो पराधीन वस्तु होय सो दुर्लभ है अर स्वाधीन होय सो सुलभ है. सो यह बोधि है सो आत्माका स्वभाव है सो स्वाधीन है. अपना स्वरूप जानै तब आपहीकै पासि है सो यह दुर्लभ नाहीं. अर जेतै अपना स्वरूप न जानै तेतै आत्मा कर्मके आधीन है सो या अपेक्षा अपना बोधिस्वभाव पावना दुर्लभ है. अर कर्मकृत सर्व ही संसारमें सुलभ है. तहां आचार्य व्यवहारनयकी अपेक्षा बोधिका दुर्लभपणा वर्णन किया है. जो उत्तरोत्तर पर्याय पावतैं पावतैं बोधिकै योग्य पर्याय पावना दुर्लभ है.अर तामैं भी बोधि पावना दुर्लभ है सो पापकरि प्रमादादिकै वशि होय याकूं गमावना नाहीं. यह उपदेश है ॥

दोहा.

बोधि आपका भाव है, निश्चय दुर्लभ नाहिं ।
भवमें प्रापति कठिन है, यह व्यवहार कहाहिं ॥१२॥

इति बोधिदुर्लभानुप्रेक्षा ।

अथोपसंहारः ।

अब बारह भावनाका प्रकरण पूर्ण करै हैं तहां तिनिका फल तथा महिमा कहै हैं.—

दीव्यन्नाभिरयं ज्ञानी भावनाभिर्निरन्तरम् ॥
इहैवाप्नोत्यनातङ्कं सुखमत्यक्षमक्षयम् ॥ १ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषार्थ—इनि बारह भावनानिकरि निरन्तर रमता ज्ञानी जन है सो इसही लोकमें रोगादिककी बाधारहित अतीन्द्रिय अविनाशी सुखकूं पावै है अर्थात् केवलज्ञानानन्द सुखकूं पावै है ॥

आर्याछन्दः ।

विध्याति कषायाग्निर्विगलति रागो विलीयते ध्वान्तं ।
उन्मिषति बोधदीपो हृदि पुंसां भावनाभ्यासात् ॥२॥

भाषार्थ—इनि भावनानिका अभ्यासतैं पुरुषनिके हृदयविषै कषायरूप अग्नि है सो तो बुझि जाय है बहुरि ज्ञानरूपदीपक है सो प्रकाश होय है ॥

शार्दूलविक्रीडितच्छन्दः ।

एता द्वादशभावनाः खलु सखे सख्योपवर्गश्रिय-
मस्याः संगमलालसैर्घटयितुं मैत्रीं प्रयुक्ता बुधैः ।
एतासु प्रगुणीकृतासु नियतं मुक्त्यङ्गना जायते
सानन्दा प्रणयप्रसन्नहृदया योगीश्वराणां मुदे ॥३॥

भाषार्थ—आचार्य कहै हैं हे मित्र ! ए बारह भावना हैं ते निश्चयकरि मुक्तिरूप लक्ष्मीकी सखी है. तहां जे तिस मुक्तिरूप लक्ष्मीके संगमके लालची पंडित जन हैं तिनिनै तिसकी मित्रता बनावनेकूं प्रयोगरूप ये भावना कहीं हैं तहां इनि भावनानिकूं अभ्यासरूप करतै संतै निश्चयतैं मुक्तिरूप स्त्री है सो आनंदसहित स्नेहरूप प्रसन्नहृदय भई सन्ती

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

योगीश्वरनिके हर्षके अर्थि होय है. **भावार्थ**–ए भावना पंडितनिनै मुक्तिकी सखी सारिखी कही है सो योगीश्वर इनिकूं भावै तब ए मुक्तिकूं मिलावै है. ऐसैं भावनाका वर्णन किया ॥

याका तात्पर्य ऐसा जो इस ज्ञानार्णव शास्त्रमें ध्यानका (योगका) अधिकार है. अर ध्यान है सो मोक्षका कारण है. तहां जेतैं संसारदेहभोगतैं प्राणीनिकै रुचि रहै, तेतैं ध्यानकै सन्मुख होय नाहीं अर ए भावना हैं ते संसारदेह भोगतैं वैराग्य उपजावनेकूं निमित्त है तातैं इनिका वर्णन पहिलै किया है. तहां ए प्राणी अनादितैं पर्यायबुद्धि है द्रव्यबुद्धि कदे भई नाहीं. अर पर्याय है सो अनित्य है तातैं द्रव्यबुद्धि करावनेकूं पर्यायकूं अनित्य दिखाई. इनितैं वैराग्य भये ध्यानकी रूचि होय बहुरि यह प्राणी मोहतैं परका शरणा चाहै जेतै ध्यान होय नाहीं, तातैं परका शरणा छुडाय आपका शरण बताया. बहुरि संसारमें दुख दिखाया. बहुरि आपके एकत्वपणा जनाया. बहुरि अन्यका संगतैं मोह उपजै तातैं आपकूं अन्य जनाया. बहुरि आस्रवतैं कर्मका बन्ध होना जनाया. संवरतैं ध्यानकी सिद्धि जनाई. निर्जराका कारण ध्यान तथा निर्जरातैं ध्यानकी वृद्धि जनाई. लोकका स्वरूप जाननेतैं मिथ्या श्रद्धान जाय यातैं लोकका स्वरूप जनाया. धर्म है सो ध्यानका स्वरूप ही है यातैं धर्मका रूप जनाया बहुरि बोधिकी दुर्लभता जनाई. याका संयोग

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मिले प्रमाद न सेवना. ऐसा उपदेश कीया. ऐसैं बारह भावनाका स्वरूप जानि इनिकी भावना निरन्तर भाये ध्यानमैं रुचि होय ध्यानमैं थिर भये केवलज्ञान उपजाय मोक्ष प्राप्त होय है! ऐसा तात्पर्य है॥

दोहा.

ऐसैं भावै भावना, शुभवैराग्य जु पाय।
ध्यान करै निजरूपको, ते शिवपहुंचै धाय॥१३॥

इति श्रीशुभचन्द्राचार्यविरचित योगप्रदीपाधिकारस्वरूप ज्ञानार्णवनाम संस्कृत ग्रन्थकी देशभाषामय वचनिकाविषै द्वादशानुप्रेक्षाका प्रकरण समाप्त भया॥

समाप्त.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only